Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

ब्रह्म-प्रसाद

लेखक—

श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज

परिव्राजक

दूसरीवार १०००	मई १९५५	ज्येष्ठ २०१२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या
पुस्तक संख्या
आगत पञ्जिका संख्या

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

		पृष्ठ
		१—७
		८—१०
		१०—१२
		१२—१४
		१५
		१५—१७
		१७—१९
		२०—२३
		२४—२५
		२५—२७
		२७—३३
		३३
		३४—३५
१४	श्री महात्मा हंसराज जी महाराज	३५—३६
१५	पतित पावनी माता	३६—४०
१६	श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज	४०—४९
१७	गायत्री साधना से श्री समृद्धि और आपत्तियों का निवारण	४९—५९
१८	महिलाओं के लिये विशेष साधनाएँ	५९—६५
१९	गायत्री साधना से सफलता के कुछ लक्षण	६५—६६
२०	गायत्री सफलता—साधक की अवस्था	६६—६८
२१	सावधानता	६८—६९
२२	सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते	६९—७६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वाधिकार सुरक्षित

"ब्रह्म-प्रसाद"

गुरु मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो योनः प्रचोदयात् ॥

लेखक—

श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज
परिव्राजक

प्रकाशक—

"श्रीमती उत्तमी बाई जी"

प्रथम बार १००० दूसरी बार १००० फाल्गुण २०१२
तदनुसार १९५५ ई०

सामवेद अथर्ववेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी
पुस्तक सं० २०
आगत सं० २३
तिथि ३६,८६
गुरुकुल ग्रन्थालय काँगड़ी

ओ३म्

भूमिका

मैं २४।१२।५३ से ३१।१२।५३ तक पतित पावनी पाप मोचनी वरदा वेद माता श्री गायत्री मन्त्र द्वारा सवा लक्ष आहुति का महान यज्ञ श्रीमान् सेठ शेरसिंह जी मौहल्ला बावड़ा रोहतक को करा रहा था। यज्ञ की पूर्णाहुति के तीन दिन पहिले मेरे पास सेठ जी आये और कहा "महाराज! आप इस गायत्री माता के सम्बन्ध में छोटी सी पुस्तक जो रुचि कर हो लिख देवें। उसे छपवा कर यज्ञ की पूर्ण आहुति पर यही प्रसाद रूप ही प्रेमियों की भेंट की जावे; ताकि घर घर इस माता की पूजा हो जिस से संसार सुख शान्ति का धाम बन जावे"।

मैंने कहा "सेठ जी! गायत्री मन्त्र के सम्बन्ध में अनेकों विद्वानों ने पुस्तकें लिखी हैं, पर प्राया उनकी भावना पुस्तक लिखते समय स्वार्थ की होती है"। वह कैसे?' यूं! पुस्तक लिख कर छपवाई, चार आने खर्च हुए, तो आठ आने कीमत लगाकर बेची। अर्थात् उनका उद्देश्य धन कमाना ही होता है। भगवान् का ज्ञान जो भगवान की निज पूंजी है, जो शान्ति का मूल कारण है उसे पैसे टके में बेचा जाता है। इसी कारण से संसार को लाभ नहीं होता है। गायत्री मन्त्र जो वेद मुख माता है इसके साक्षात करने वाला भगवद्भक्त पुस्तक लिखे और भगवान् की दात समझ कर निष्काम भाव से भगवत् प्रजा में भेंट करदे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सज्जनो ! भगवान् की वाणी को भगवान् का भक्त ही जाने। ज्ञानी क्या जाने ? वह ज्ञान रूखा है जिसको भक्ति के रंग से नहीं रंगा गया। देखो ! मैं आज गवर्नमेण्ट के विरुद्ध कुछ शब्द कहूँ, तो गवर्नमेण्ट मुझे पकड़ कर हथकड़ी हाथों में पहना कर जेल में डाल देगी। इसके अतिरिक्त यदि मेरे जैसे शब्द महात्मा गांधी बोले, तो पार्लियामेण्ट कम्पायमान हो जावेगी। प्यारे ! यह क्यों ? शब्द तो एक जैसे थे, एक को जेलखाना प्राप्त हो, और दूसरे से राजा भयभीत हो जावे। कारण, प्यारे ! मेरी वाणी बिखरी वाणी है, पैसे टके में बिकी हुई है। पर महात्मा गांधी की वाणी भगवान् की वाणी थी, वह भगवान् का भक्त था, वह उसी का यन्त्र बन कर रहा, उस की वाणी जीवित वाणी थी, दूसरों को जीवन देती थी, वह अमर वाणी थी। वह अमृत वेला में अमृत पान करता था और हम वह समय खो कर विषपान करते हैं जिससे हम स्वयं दुखी और दूसरों को भी दुखी बना रहे हैं।

प्रिय पाठक गण ! इस समय मैं १६-१-५३ से श्रीमान् लाला रामलाल जी इंजीनियर पावर हाउस चन्दौसी जिला मुरादाबाद के यहां ठहरा हुआ मौन व्रत में हूं। आज २७-१-५३ मंगलवार प्रातः ५ बजे भजन समय में मुझे भगवद् प्रेरणा हुई, और सेठ शेरसिंह जी की सात्विक भावना मेरे सामने आई कि मैं श्री गायत्री माता के सम्बन्ध में छोटी सी पुस्तक स्वयं लिखूं तो चकित सा हो गया। थोड़ी देर में यह उत्साह हो गया कि तुम नकलिया हो, नकल तो कर सकते हो, असली बात को असली वाला जाने। तू इसे अपना इष्ट तो मानता है, गुरुदेव का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशीर्वाद तुम्हारे साथ रहता है। जब भगवद्प्रेरणा हो रही है तो तुम यन्त्र बनकर काम करो।

प्यारे! मैं स्वयं न तो ज्ञानी हूँ, न विद्वान्! हां इसी गायत्री माता का पुजारी अवश्य हूँ। परन्तु मैं स्वयं इस माता की महिमा को वर्णन करने में असमर्थ हूँ। हां नकलिया होने के नाते महानुभावों के संग तथा उनकी पुस्तकों के स्वाध्याय से जो कुछ रुचिकर लेख प्राप्त हुए, तथा अपने अनुभव से 'ब्रह्म प्रसाद, नाम रख कर छोटी सी पुस्तक आप प्रेमियों के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ। कृपया इसे आप स्वयं पढ़ें, तथा अन्य अपने इष्ट मित्रों को पढ़ावें। स्वयं आचरण करते तथा दूसरों को आचरण कराते हुए भगवान का आशीर्वाद प्राप्त करें। हां इतना व्रत अवश्य ले लेवें, कि कम से कम १० अन्य व्यक्तियों को यह पुस्तक अवश्य पढ़ायेंगे।

मैं पूज्य गुरुदेव जी और श्री श्रीराम शर्मा आचार्य का धन्यवाद करता हूँ जिनकी पुस्तकों के स्वाध्याय करने से मुझे इस "ब्रह्म प्रसाद" पुस्तक के लिखने में सहायक सामग्री प्राप्त हुई है।

समर्पण

त्वदीयं वस्तु गोविन्द! तुभ्यमेव समर्पये

जगन्नियन्ता जगदीश की असीम अनुकम्पा से महर्षि परिव्राजकाचार्य स्वामी दयानन्द जी महाराज द्वारा प्रेरित पञ्च-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महायज्ञ विधि के ब्रह्म यज्ञ प्रसाद ३००० देव यज्ञ प्रसाद ६००० पितृ यज्ञ प्रसाद ३००० अतिथि यज्ञ प्रसाद २००० यज्ञ प्रसाद ४००० ब्रह्म प्रसाद १००० भगवद् यज्ञ प्रसाद १००० मौन यज्ञ प्रसाद २००० नारी कर्तव्य प्रसाद १००० प्रेम सुमन प्रसाद १००० अमृत प्रसाद १००० परिवारिक सत्संग प्रसाद १७००० (४२०००) अपने प्रभु प्रेरित विचारों के रंग में रंग कर प्रभु प्रसाद के रूप में भेंट कर चुका हूँ—

प्रभु की प्रेरणामयी रचना—उन्हीं के पवित्र चरणों में विनम्र भाव से समर्पण है—और प्रार्थना करता हूँ कि वह अपनी दया कृपा से मुझे सामर्थ्य और शक्ति प्रदान करते हुए ऐसे मंगल कार्य करने की प्रेरणा करते रहें।

ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः !

भवदीय—

ब्रह्मानन्द स्वामी

C/o भारत गलास कम्पनी

सदर बाजार (देहली)

प्यारे प्रेमी ! पुस्तक लेते समय मुझ से पुस्तक पर पुस्तक का मूल्य न लिखा देख कर मूल्य पूछा करते हैं, उन की सेवा में निवेदन है, कि अग्नि में जो वस्तु डाली जाती है वह विश्व में बांट देती है संन्यासी भी अग्नि रूप होता है मैं जब भी पुस्तक लिख कर छपवाना चाहता हूँ तो प्रभु कृपा से जिन प्यारों के पास भगवत पूञ्जी होती है वह सात्विक भावना से भेज देते हैं पुस्तक छपवा कर प्रेमियों की सेवा भगवद् प्रसाद रूप में भेंट कर दी जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे से लोग प्रश्न करते हैं, कि महाराज ! मुफ्त चीज़ का मान नहीं होता। लोग रद्दी की टोकरी में डाल देते हैं। मेरा उन से निवेदन है, कि यह भगवान का कार्य है और भगवत् प्रसाद रूप में दिया जाता है। यदि रद्दी का माल होता तो किसी के हृदय में सविता देव अज्ञात रूप में क्यों प्रेरणा करते, मेरा तो काम है प्रचार करके वेद-पथ विमुख जनता को सन्मार्ग पर लगाना। सविता देव इस कार्य में मेरे साथ हैं फिर चिन्ता किस बात की। जिन प्यारों के पास भगवद् पूञ्जी होती है वह ही उसी के कार्यार्थ भेंट करते हैं वह सदा ही धन धान्य से भर-पूर रहते हैं।

मेरे व्रत में मेरे प्रेमी सत्संगी श्री लाला रामलाल जी इञ्जीनियर, पावर हाउस चन्दौसी मुरादाबाद (झङ्ग मघियाना निवासी) तथा उनके परिवार ने जो श्रद्धा भावना से सेवा की और मेरे व्रत के निर्विघ्न समाप्त होने में जो सहायता की उस के लिये उन सब का भी धन्यवाद गाता हूँ और प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें आशीर्वाद दे। शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, व आर्थिक उन्नति में माला-माल करें। और धर्म कार्यों में प्रवृति बनाये रक्खें।

जिन सज्जनों के हाथ यह पुस्तक आवे वह प्रतिज्ञा करें कि न्यून से न्यून दस अन्य प्रेमियों को यह पुस्तक अवश्य पढ़ायेंगे। ऐसा करने पर उन्हें भी प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त होगा।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा संस्करण

ओ३म् नैनं प्राप्नोति शपथो न कृत्या नाभि शोचनम्।
नैनं विष्कन्धमश्नुते यस्त्वा बिभर्त्याञ्जन ॥

(अ० का० ४ सू० ९ मं० ५)

भावार्थ—जो मनुष्य शुद्ध अन्तःकरण से परमात्मा को आत्मा में स्थिर करता है उस को अध्यात्मिक शान्ति होने से आधभौतिक और आधदैविक शान्ति मिलती है।

प्रिय पाठक गण—इस ब्रह्म प्रसाद पुस्तक के दूसरे संस्करण के "प्रकाशक" का सारा खर्च एक ऐसे प्रेमी ने दिया है जिस ने पतित पावनी पाप मोचनी कष्ट निवारणी वरदा वेद माता श्री गायत्री माता का ऐसे समय में बड़ी श्रद्धा, अटल विश्वास और शुद्ध अन्तःकरण से व्रत धारण कर पूजन किया जब के वह तीन वर्ष के परिश्रम करने पर भी अपने कार्य को पूर्ण कर पाने में असफल रहा, व्रत पूर्ण होने पर सविता देव ने सफलता प्रदान कर दी।

प्रभु देव ऐसे सद्ग्रहस्थी परिवार को अशीर्वाद दें और उन की परिवार सहित धर्म कार्यों में प्रवृत्ति बनाए रक्खें।

भवदीय—

ब्रह्मानन्द स्वामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

गायत्री जाप करने में असफलता का कारण

गायत्री मन्त्र की महिमा गाते हुए शास्त्र और ऋषि महर्षि थकते नहीं। इस की प्रशंसा तथा महत्ता के सम्बन्ध में जितना कहा गया है उतना शायद ही और किसी की प्रशंसा में कहा गया हो। प्राचीन काल में बड़े २ तपस्वियों ने प्रधान रूप से गायत्री की ही तपश्चर्याएँ करके अभीष्ट सिद्धियां प्राप्त की थीं। शाप और वरदान के लिए वे विविध विधियों से गायत्री का ही उपयोग करते थे।

प्राचीन काल में गायत्री गुरु मन्त्र था, गुप्त-मन्त्र था। उसे कोई विरले ही जानते थे। जो नहीं जानते थे वे इसे जानने के लिए बड़ी लालसा रखते थे, और जब उन्हें वह प्राप्त हो जाता था तो विपुल धन भंडार प्राप्त करने की तरह प्रसन्नता अनुभव करते थे। आज गायत्री मन्त्र प्रसिद्ध है। अधिकांश मनुष्य उसे जानते हैं। पुस्तकों में यह आसानी से ढूंढा जा सकता है। अनेकों मनुष्य किसी न किसी प्रकार उसको दुहराते या जपते रहते हैं। अथवा किसी विशेष अवसर पर स्मरण कर लेते हैं। इतने पर भी देखा जाता है कि उससे कोई विशेष लाभ नहीं होता। गायत्री जानने वालों में और न जानने वालों में कोई विशेष अन्तर दिखाई नहीं देता। इस आधार पर यह आशंका होने लगती है कि—कहीं गायत्री की प्रशंसा और महिमा वर्णन करने वालों ने अत्युक्ति तो नहीं की है? कई मनुष्य आरम्भ में उत्साह दिखाकर थोड़े ही दिनों में उसे छोड़ बैठते हैं। वे देखते हैं कि इतने दिन हम ने गायत्री की उपासना की, पर लाभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ न हुआ । फिर क्यों इस के लिये व्यर्थ समय बर्बाद किया जाय ।

कारण यह है, कि प्रत्येक कार्य एक नियत विधि व्यवस्था द्वारा ही पूरा होना है । चाहे जैसे, चाहे जिस काम को, चाहे जिस प्रकार, करना आरम्भ कर दिया जाये तो अभीष्ट परिणाम नहीं मिल सकता । मशीनों द्वारा बड़े २ कार्य होते हैं, पर होते तभी हैं जब वे उचित रीति से चलाई जावें । यदि कोई अनाड़ी चलाने वाला, मशीन को यों ही अन्धाधुन्ध चालू कर दे तो लाभ होना तो दूर, उल्टे उस कारखाने के लिए तथा चलाने वाले के लिये संकट उत्पन्न हो सकता है । मोटर तेज़ दौड़ने वाला वाहन है । उसके द्वारा एक दिन में कई सौ मील की यात्रा सुख पूर्वक की जा सकती है । पर अगर कोई अनाड़ी आदमी ड्राईवर की जगह जा बैठे और चलाने की विधि तथा कल-पुर्जों की जानकारी और उनका उपयोग न जानते हुए भी उसे चलाना आरम्भ कर दे तो यात्रा तो दूर, उल्टे ड्राईवर, मोटर तथा यात्रा करने वाले के लिए अनिष्ट खड़ा हो जावेगा या यात्रा निष्फल होगी । ऐसी दशा में मोटर को कोसना, उस की शक्ति पर अविश्वास कर बैठना उचित नहीं कहा जा सकता । अनाड़ी साधकों द्वारा की गई उपासना भी यदि निष्फल हो तो आश्चर्य की बात नहीं है ।

जो वस्तु जितनी अधिक महत्त्व पूर्ण होती है उस की प्राप्ति उतनी ही कठिन भी होती है । सीप, घोंघे आसानी से मिल सकते हैं उन्हें चाहे कोई बीन सकता है । पर मोती जिन्हें प्राप्त करने हैं उन्हें समुद्र तल तक उतरना पड़ेगा । और इस खतरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के काम को किसी से सीखना भी पड़ेगा। कोई अजनबी आदमी गोता खोरी को बच्चों का खेल समझ कर यों ही समुद्र तल में उतरने के लिये डुबकी लगावे तो उसे अपनी नासमझी के कारण मिलने वाली असफलता पर आश्चर्य नहीं करना चाहिये।

यों गायत्री में अन्य समस्त मन्त्रों की अपेक्षा एक खास विशेषता है कि नियत विधि से साधना न करने पर भी साधक की कुछ हानि नहीं होती। परिश्रम भी निष्फल नहीं जाता, कुछ न कुछ लाभ ही रहता है। पर उतना लाभ नहीं होता जितना कि विधि-पूर्वक साधना के द्वारा होना चाहिये। गायत्री की तांत्रिक उपासना में तो अवधि साधना से हानि भी होती है, पर साधारण साधना में वैसा कोई खतरा नहीं है। तो भी परिश्रम का पूरा प्रतिफल न मिलना भी तो एक प्रकार की हानि ही है। इस लिए बुद्धिमान् मनुष्य उत्तावली, अहम्मन्यता, उपेक्षा के शिकार नहीं होते। और साधना मार्ग पर वैसी ही समझदारी से चलते हैं। जैसे हाथी नदी को पार करते समय थाह २ कर कदम बढ़ाता है।

———

* ओ३म् *

गायत्री जाप में सफलता प्राप्त करने के साधन साधक का गुरु के प्रति विश्वास और श्रद्धा

गुरु कर्त्तव्य

———

आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए श्रद्धा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास ये दो प्रधान अवलम्बन हैं। इन दोनों का प्रारम्भिक अभ्यास गुरु को माध्यम बना कर किया जाता है। श्रद्धा और विश्वास की उन्नति गुरु नामक व्यक्ति के ऊपर उन्हें दृढ़ता पूर्वक जमाने से होती है। प्रेम तो स्त्री, पुत्र, भाई, मित्र आदि पर भी हो सकता है, पर श्रद्धा युक्त प्रेम का पात्र गुरु ही होता है। पिता माता भी यदि वसिष्ठ, विश्वामित्र गुणों वाले हों तो वे सब से उत्तम गुरु हो सकते हैं। गुरु परम हित चिन्तक, शिष्य की मनोभूमि से परिचित और उसकी कमजोरियों को समझने वाला होता है। इस लिए उसके दोषों को जानकर उन्हें धीरे २ दूर करने के उपाय करता रहता है। पर उन दोषों के कारण न तो वह शिष्य से घृणा करता है न विरोध, ना ही उसको अपमाणित, तिरस्कृत, एवं बदनाम होने देता है। वरन् उन दोषों को बाल-चापल्य समझ कर धीरे २ उसकी रुचि दूसरी ओर मोड़ने का प्रयत्न करता रहता है, ताकि वे दोष अपने आप छूट जायें। योग्य गुरु अपनी साधना द्वारा एकत्रित की हुई आध्यात्मिक शक्ति को धीरे २ शिष्य के अन्तःकरण में वैसे ही प्रवेश कराता रहता है जैसे माता अपने पचाये हुए भोजन को स्तनों में दूध बनाकर अपने बालक को पिलाती रहती है। माता का दूध पीकर बालक पुष्ट होता है। गुरु का आत्म तेज पीकर शिष्य का आत्म बल बढ़ता है। इस आदान प्रदान को आध्यात्मिक भाषा में 'शक्तिपान' कहते हैं। ऐसे गुरु का प्राप्त होना पूर्व सञ्चित शुभ संस्कारों का फल अथवा प्रभु की महती कृपा का चिन्ह ही समझना चाहिये।

—:o:—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गायत्री के प्रति ऋषियों का अनुभव

१. पराशर कहते हैं—जो गायत्री से हीन है वह शूद्र है।

२. शङ्ख ऋषि कहते हैं! नरक रूपी समुद्र में गिरते हुए को हाथ पकड़ कर बचाने वाली गायत्री ही है।

३. शौनक ऋषि कहते हैं गायत्री अगणित सांसारिक और पारलौकिक सुख सम्पादाओं की जननी है।

४. अत्रि ऋषि कहते हैं! जो गायत्री के तत्व को समझता है उसके लिए संसार में कोई दुःख शेष नहीं रहता।

५. व्यास जी कहते हैं! सिद्ध की हुई गायत्री कामधेनु के समान है! गंगा शरीर को पवित्र करती है! गायत्री से आत्मा निर्मल होती है।

६. भारद्वाज ऋषि का कथन है:—"गायत्री से ब्रह्म का साक्षात्कार होता है। और मनुष्य स्वर्ग तथा मुक्ति का अधिकारी बनता है"।

७. नारद जी कहते हैं! गायत्री साक्षात शक्ति का अवतार है।

८. वशिष्ठ जी कहते हैं:—मन्दमति और कुमार्ग गामी भी गायत्री के प्रभाव से उच्च पद को प्राप्त करते हैं।

ब्रह्मणः प्रणवं कुर्यादादावन्ते च सर्वदा।
स्रवत्यनोङ्कृतं पूर्वं पुरस्ताच्च विशीर्यति॥

(७४॥ मनु० अ० २)

अर्थात्—वेद के अध्ययन का समय प्रारम्भ और समाप्ति में 'ॐ' कहै। कारण पहिले ॐ न कहने से पढ़ा हुआ वेद धीरे २ भूल जाता है और अन्त में ॐ न कहने से आता ही नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि । धियो योनः प्रचोदयात् ॥

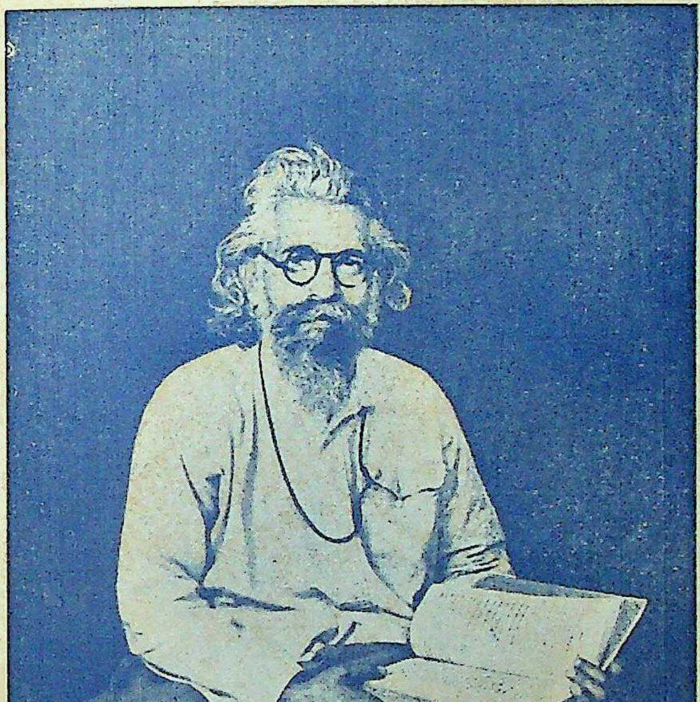

श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योऽधीतेऽहन्यहन्येतां त्रीणि वर्षाण्यतन्द्रितः ।
स ब्रह्म परमभ्येति वायुभूतः खमूर्तिमान् ॥

(मनु० अ० २ श्लोक ८२)

अर्थात्—जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, अथवा वैश्य आलस्य रहित इस गायत्री का तीन ३ वर्ष नित्य जप करता है वह वायु समान कर्मचारी ब्रह्मरूप होकर मोक्ष को प्राप्त करता है।

पूर्वां सन्ध्यां जपंस्तिष्ठन्नैशमेनो व्यपोहति ।
पश्चिमां तु समासीनो मलं हन्ति दिवाकृतम् ॥

(मनु० अ० २-१०२)

अर्थात्--प्रातः काल सूर्योदय पर्यन्त सन्ध्या, गायत्री जप, करने वाले के रात्रि में जान कर या अनजान से होने वाले पाप नष्ट होते हैं। और सायंकाल में नक्षत्र दर्शन पर्यन्त सन्ध्या, गायत्री जप करने वाले के दिन के पाप नष्ट होते हैं।

इदं शरणम ज्ञानामिद मेव विजानताम् ।
इद मन्विच्छतां स्वर्गमिद मानन्त्या मच्छताम् ॥८४

(मनु० अ० ६)

भावार्थ—अर्थ जानते हों चाहे न जानते हो सब को इस वेद का अध्ययन करने से स्वर्ग और मोक्ष मिलता है।

वर्तमान शताब्दी के महापुरुष भी गायत्री का वैसा ही महत्व स्वीकार करते हैं जैसा के प्राचीन काल के ऋषियों ने स्वीकार किया था। महात्मा गान्धी कहते थे कि स्थिरचित्त और शान्ति हृदय से किया हुआ गायत्री का जाप आपत्ति काल के संकटों को दूर करने का प्रभाव रखता है। लोकमान्य तिलक का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथन है के गायत्री मन्त्र में कुमार्ग छोड़ कर सुमार्ग पर चलाने की प्रेरणा विद्यमान है। महामना मदन मोहन जी मालवीय कहते थे कि ऋषियों ने जो अनेक अमूल्य रत्न हमें दिये हैं उन सब में श्रेष्ठ गायत्री रत्न है। कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टेगोर का कथन है कि निर्विवाद रूप से गायत्री मन्त्र राष्ट्र की आत्मा को जगाने वाला है। योगी आरविन्द घोष गायत्री में महत्व पूर्ण शक्ति सन्निहित बताते थे। स्वामी रामकृष्ण परमहंस का अनुभव था कि गस्यत्री से बड़ी बड़ी सिद्धियां मिल सकती हैं। स्वामी विवेकानन्द का वचन है कि गायत्री सब मन्त्रों की मुकुटमणी है। जगदगुरु शङ्कराचार्य का मत है कि गायत्री की महिमा वर्णन करना मनुष्य की सामर्थ से बाहर है। स्वामी रामतीर्थ कहते थे कि गायत्री बुद्धि को 'काम' में से हटा कर 'राम' में लगा देती है। महर्षि रमण की उक्ति है कि—गायत्री से आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही प्रकार से लाभ मिलते हैं। स्वामी शिवानन्द जी कहते हैं कि गायत्री जप से शरीर निरोग रहता है स्वभाव में नम्रता आती है, बुद्धि सूक्ष्म होती है, दूर दर्शिता बढ़ती है और मानसिक शक्तियों का विकास होता है।

आर्यसमाज के जन्म दाता श्री स्वामी दयानन्द महाराज गायत्री के श्रद्धालु उपासक थे वह गायत्री उपासना पर बहुत जोर देते थे। ग्वालियर के राजा साहब से स्वामी जी ने कहा था कि भागवत सप्ताह कराने की अपेक्षा गायत्री पुरुश्चरण कराना अधिक श्रेष्ठ है। श्री स्वामी जी ने कई स्थानों पर विशाल गायत्री अनुष्ठानों का आयोजन कराया था जिन में चालीस चालीस विद्वान् ब्राह्मण बुलाये गये थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निष्काम उपासना

सब से उत्तम यह है कि निष्काम होकर अटूट श्रद्धा और भक्ति भाव से गायत्री की उपासना की जाय, कोई कामना पूर्ति की शर्त न लगाई जाय। क्योंकि मनुष्य अपने वास्तविक लाभ या हानि और अवश्यकता को स्वयं उतना नहीं समझता, जितना घट घट वासिनी सर्व शक्तिमान माता समझती है। वह हमारी वास्तविक आवश्यकताओं को स्वयं पूरा करती है। प्रारब्धवश कोई अटल दुर्भाग्य ना भी टल सके तो भी साधना निष्फल नहीं जाती। वह किसी न किसी अन्य मार्ग से साधक को उसके श्रम की अपेक्षा अनेक गुना लाभ अवश्य पहुँचा देती है। सब से बड़ा लाभ आत्म कल्याण है। जो यदि संसार के समस्त दुःखों को अपने ऊपर लेने से प्राप्त होता हो, तो भी प्राप्त करने ही योग्य है।

आत्म कल्याण साधनाएं

आत्मा के कल्याण की अनेक साधनाएँ हैं। सभी का अपना २ महत्त्व है और उन के परिणाम भी अलग २ हैं। 'स्वाध्याय' से सन्मार्ग की जानकारी होती है। सत्संग से स्वभाव और संस्कार बनते हैं। कथा सुनने से सद्भावनाएँ जागृत होती हैं। 'तीर्थ यात्रा' से भावांकुर पुष्ट होते हैं। 'कीर्तन' से तन्मयता का अभ्यास होता है। 'दान-पुण्य' से सुख सुभाग्यों की वृद्धि होती है। इस प्रकार यह सभी साधन ऋषियों ने बहुत सोच समझकर प्रचलित किये हैं। पर 'तप' का महत्त्व इन सब से अधिक है। 'तप' की अग्नि में पड़ कर ही आत्मा के मैल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विक्षेप और पाप ताप जलते हैं। तप के द्वारा ही आत्मा में वह प्रचण्ड बल पैदा होता है। जिसके द्वारा सांसारिक तथा आत्मिक जीवन की समस्याएँ हल होती हैं।

तप की सामर्थ्य से ही नाना प्रकार की सूक्ष्म शक्तियां और दिव्य सिद्धियां प्राप्त होती हैं। इसलिये 'तप' साधन को सब से अधिक शक्तिशाली माना गया है। तप के बिना आत्मा में अन्य किसी भी साधन से तेज, प्रकाश, बल, एवं प्राक्रम उत्पन्न नहीं होता।

गायत्री की साधना द्वारा आत्मा पर जमे हुए मल विक्षेप हट जाते हैं, तो आत्मा का शुद्ध स्वरूप प्रकट होता है और अनेक ऋद्धि-सिद्धियां परिलक्षित होने लगती हैं। दर्पण मांज देने पर उसका मैल छूट जाता है, उसी प्रकार गायत्री साधना से आत्मा निर्मल एवं प्रकाशवान होकर ईश्वरीय शक्तियों, गुणों, सामर्थ्यों एवं सिद्धियों से परिपूर्ण बन जाती हैं।

गायत्री मन्त्र से आत्मिक कायाकल्प हो जाता है। इस महामन्त्र की उपासना आरम्भ करते ही साधक को ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे आन्तरिक क्षेत्र में एक नई हलचल एवं रद्दोबदल आरम्भ हो गई है। सतोगुणी तत्वों की अभिवृद्धि होने से दुर्गुण, कुविचार, दुःस्वभाव, एवं दुर्भाव घटने आरम्भ हो जाते हैं। और संयम, नम्रता, पवित्रता, उत्साह, स्फूर्ति, श्रम-शीलता, मधुरता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, उदारता, प्रेम, सन्तोष, शान्ति, सेवा भाव, आत्मीयता आदि सद्गुणों की मात्रा दिन दिन बड़ी तेजी से बढ़ती जाती है। फलस्वरूप लोग उसके स्वभाव एवं आचरण से सन्तुष्ट होकर बदले में प्रशंसा, कृतज्ञता, श्रद्धा एवं सम्मान के भाव रखते हैं, और समय समय पर उसकी अनेक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार से सहायता करते रहते हैं। इसके अतिरिक्त सद्गुण स्वयं इतने मधुर होते हैं कि जिस हृदय में इनका निवास होगा वहां आत्म सन्तोष की परम शान्तिदायक शीतल निर्झरिणी सदा बहती रहती है। ऐसे लोग सदा स्वर्गीय सुख का आस्वादन करते हैं।

गायत्री से बुद्धि विकास

जिन की स्मरण शक्ति शिथिल है, बुद्धि मन्द है, मस्तिष्क जल्दी थक जाता है, उन्हें गायत्री उपासना करके थोड़े ही समय में इस महाशक्ति के चमत्कार देखने को मिलते हैं। कीमती दवाएँ जो कार्य नहीं कर सकतीं वह इससे पूरा होता है ब्राह्मी तेल लगाने और बादाम पाक सेवन से मस्तिष्क को उतना बल नहीं मिल सकता, जितना इस उपासना से मिलता है। सिर में दर्द, चक्कर आना, निद्रा में कमी, आये दिन जुकाम, बाल झड़ना आदि रोगों की शिकायतें जिन्हें बनी रहती है उन्हें गायत्री उपासना का अवलम्बन करना चाहिये। इस से मस्तिष्क के सभी कल, पुर्जे, बलवान्, सजीव चैतन्य और निरोग बनते हैं, बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी जिनके मन क्षेत्र में प्रवेश करेगी, उसका मानसिक विकास होना स्वभाविक है। मस्तिष्क के अन्तर्गत जो नाना प्रकार की शक्तियां सन्निहित हैं उनका धीरे २ विकास होता है, और मनुष्य बुद्धिमान बिवेकशील एवं प्रतिभावान बनता चलता है।

गायत्री उपासना से सद्बुद्धि बढ़ती है और कुबुद्धि के कारण जो नाना प्रकार की कठिनाइयां, समस्याएँ, उलझने से पैदा होती रहती हैं वह सहज ही समाप्त हो जाती हैं। जो सुधार गाली, गलौच, मारपीट, ताड़ना, असहयोग आदि से सम्भव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं वह गायत्री उपासना से सदबुद्धि बढ़ने के कारण बड़ी सुविधा पूर्वक हो जाता है। मन में शान्ति और सुमति हो तो शरीर गत अनेक रोग दूर होते हैं। अव्यवस्थित और अनियमित आहार विहार के कारण ही प्रायः बीमारियां होती हैं। सदबुद्धि बढ़ने से मनुष्य के विचार और कार्य संयम, नियम, स्वच्छता, नियमितता और व्यवस्थामय होने लगते हैं। फलस्वरूप बीमारियों की जड़ ही कट जाती है। डाक्टरों और वैद्यों के लम्बे चौड़े बिल, रोगी को शारीरिक कष्ट तथा घर वालों की परेशानी यह तीनों ही झंझट गायत्री उपासकों के घर से टलते देखे गये हैं।

जो स्त्रियां बात बात में अपने दुर्भाव का रोना रोया करती थीं दूसरों पर नाना प्रकार के दोषारोपण किया करती थीं और अपने को अत्याचार ग्रस्त मानकर सदा दुःखी रहती थीं उनकी अनेकों बार गायत्री उपासना से मति पलती है। उन्होंने आत्म चिन्तन किया है, अपनी भूलों को पहचाना है, अपने स्वभाव, कार्यक्रम और दृष्टिकोण में गलतियां पाई हैं और उस में सुधार करके अपने में ऐसा परिवर्तन किया है, कि उन्हें वे ही परिजन जो कुछ समय पहले स्वार्थी, अन्यायी, दुष्ट दिखाई पड़ते थे, फिर भले मनुष्य दीखने लगे। अपना स्वभाव एवं दृष्टिकोण बदलते ही दूसरों का व्यवहार भी बदल गया और इस प्रकार सहज ही शांतिमय वातावरण उत्पन्न हो गया।

गायत्री उपासना करने वाली स्त्रियों के पेट में जो संतान होती है उस पर माता के विचारों का बड़ा उत्तम प्रभाव पड़ता है। उसमें विद्या, बुद्धि, विवेक, तेज, सदाचार आदि गुणों की कमी नहीं रहती। माताएँ बालकों को दूध पिलाते समय यदि मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीं मन गायत्री मन्त्र जपती रहें, तो वह दूध बालक के शरीर और मन को शुद्ध बनाने के लिए अमृत रूप हो जाता है। बच्चों को निरोग, हँसमुख, सुन्दर, तेजस्वी, बुद्धिमान्, गुणवान और दीर्घजीवी बनाने में माताएँ गायत्री महामन्त्र से आशाजनक लाभ उठा सकती हैं।

गायत्री उपासना से मनुष्य की अनेक कठिनाईयाँ हल होती हैं। ऐसे अनेक उदाहरण मौजूद हैं कि जो लोग आरम्भ में दरिद्रता का अभाव ग्रस्त जीवन व्यतीत करते थे, अपने ममूली गुजारे की भी व्यवस्था जिन के पास न थी, ऋण के बोझ से दबे हुये थे, व्यापार में घाटा जा रहा था। उन्होंने गायत्री की उपासना की और अर्थ संकट को पार करके ऐसी स्थिति पर पहुँच गये कि जिस को अनेकों के लिए ईर्षा होती है। कम पढ़े और छोटी नौकरियों पर काम करने वालों को उच्चे पद पर पहुँचने के उदाहरण मौजूद हैं। जिनकी बुद्धि बड़ी ही भौड़ी और मन्द थी, वे चतुर, तीक्षण बुद्धि और विद्वान बने हैं। जिन की परीक्षा में उतीर्ण होने की कोई आशा नहीं करता था, ऐसे विद्यार्थी अच्छे नम्बरों से पास हुए हैं। झगड़ालू, चिड़चिड़े, क्रोधी, व्यसनी, बुरी आदतों में फंसे हुए, आलसी एवं मूढ़ मति लोगों के स्वभाव में ऐसा परिवर्तन हुआ है कि लोग दांतों तले उँगली दबाए रह गए।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्म—प्रसाद

गुरु मन्त्र

ओ३म् भू र्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योनः प्रचोदयात्।

ओ३म्—ब्रह्म-रक्षा करने वाला	भर्गः—पाप नाशक
भूः—प्राणस्वरूप	देवस्य—दिव्य को देने वाले को
भुवः—दुःखनाशक	धीमहि—धारण करें
स्वः—सुख स्वरूप	धियः—बुद्धि
तत्—उस	यः—जो
सवितुः—तेजस्वी प्रकाशवान्	नः—हमारी
वरेण्यं—श्रेष्ठ वरण योग्य	प्रचोदयात्—प्रेरित करे

भावार्थः—

हे सर्व रक्षक ओ३म् तुम को, बार बार प्रणाम है।
प्राण प्रिय 'भूः' दुख विनाशक, 'भुवः' तुम्हारा नाम है॥
सत्चित 'स्वः' आनन्द कन्द मंगल, मूल तुम सुख रूप हो।
हम हैं प्रजा सब आप की, तुम ही हमारे भूप हो॥
माता-पिता 'सविता' विधाता, देव दिव्य प्रकाश हो।
हम ग्रहण करते हैं 'वरेण्यं', भक्त जन की आश हो॥
शुभ गुण सदन विज्ञान सागर, 'भर्ग' प्रिय भुवनेश हो।
हम हैं उपासक आप के, तुम ज्ञान गम्य गणेश हो॥
मानस भवन में आप का, हम ध्यान नित धरते रहें।
प्रेरित करो बुद्धि हमारी, दुरित सब हरते रहें॥
हो भव्य भावों से भरा, भगवन यह घर आप का।
निशिदिन सुमंगल गान हो, दर्शन न होवे पाप का॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गायत्री मन्त्र के इस अर्थ पर मनन एवं चिन्तन करने से अन्तःकरण में उन तत्वों की वृद्धि होती है जो मनुष्य को देवत्व की ओर ले जाते हैं। वे भाव बड़े ही शान्ति दायक उत्साह प्रद, सतोगुणी, उन्नतिदायक एवं आत्म बल बढ़ाने वाले हैं। इन भावों का नित्यप्रति कुछ मनन करना चाहिये।

मनन के लिये कुछ संकल्प नीचे दिये जाते हैं। इन शब्दों को मन ही मन दुहराना चाहिये और कल्पना शक्ति की सहायता से इनका मानस चित्र मनोलोक में भली प्रकार अंकित करना चाहिये।

१—"भूलोक, भुवः लोक, स्वःलोक तीनों लोकों में ॐ परमात्मा समाया हुआ है। यह जितना भी विश्व ब्रह्माण्ड है, परमात्मा की महानता को प्रकट कर रहा है, कण कण में भगवान् समाये हुए हैं। इस सर्व व्यापक परमात्मा को सर्वत्र देखते हुए, मुझे कुविचारों और कुकर्मों से सदा दूर रहना चाहिये, एवं संसार की सुख शान्ति तथा शोभा बढ़ाने में सहयोग देकर प्रभु की सच्ची पूजा करनी चाहिये"।

२—तत्—वह परमात्मा, सवितुः—तेजस्वी, वरेण्यं—श्रेष्ठ, वरने योग, भर्गः—पाप रहित और देवस्य—दिव्य हैं। उसको मैं अन्तःकरण में धारण करता हूँ। इन गुणों वाले भगवान् मेरे अन्तःकरण में प्रतिष्ठित होकर मुझे भी तेजस्वी, श्रेष्ठ, एवं दिव्य बनाते हैं। मैं प्रतिक्षण इन गुणों से युक्त होता जाता हूँ इन गुणों की मात्रा मेरे मस्तिष्क तथा शरीर के कण कण में बढ़ती जाती है। मैं इन गुणों से ओत प्रोत होता जाता हूँ।

३—"यो—वह परमात्मा, नः—हमारी, धियः—बुद्धि को, प्रचोदयात्—सन्मार्ग में प्रेरित करे। हम सब की, हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वजनों परिजनों की बुद्धि सन्मार्ग गामी हो। संसार की सब से बड़ी विभूति, सुखों की आदि-माता सद्बुद्धि को पाकर हम इस जीवन में ही स्वर्गीय आनन्द का उपभोग करें। मानव जन्म को सफल बनावें"।

उपरोक्त तीन चिन्तन संकल्प धीरे २ मनन करने चाहियें और एक एक शब्द पर कुछ क्षण रुकना चाहिये। शब्द का कल्पना चित्र मन में बनाना चाहिये।

जब यह शब्द पढ़े जा रहे हों कि परमात्मा भूः भुवः स्वः तीनों लोकों में व्याप्त है तब ऐसी कल्पना करनी चाहिये जैसे हम पाताल, पृथ्वी, स्वर्ग को भली प्रकार देख रहे हैं और उस में गर्मी, प्रकाश, बिजली शक्ति या प्राण की तरह परमात्मा सर्वत्र समाया हुआ है। यह विराट् ब्रह्माण्ड ईश्वर की एक जीवित जागृत अद्भुत महा शक्ति है। गीता में अर्जुन को जिस प्रकार भगवान् ने अपना विराट् रूप दिखाया है, वैसे ही विराट् पुरुष के दर्शन अपने कल्पना लोक में मानस चक्षुओं से करने चाहियें। खूब जी भर कर इस विराट् ब्रह्म के, विश्व पुरुष के, दर्शन करने चाहियें। और अनुभव करना चाहिये कि मैं इस विश्व पुरुष के पेट में बैठा हूँ। मेरे चारों ओर परमात्मा ही परमात्मा है। ऐसी महा शक्ति की उपस्थिति में कुविचारों और कुकर्मों को मैं किस प्रकार अंगीकार कर सकता हूँ? इस विश्व पुरुष का कण कण मेरे लिये पूजनीय है, उसकी सेवा, सुरक्षा एवं शोभा बढ़ाने में प्रवृत्त रहना ही मेरे लिये श्रेयस्कर है।

संकल्प के दूसरे भाग का चिन्तन करते हुए अपने हृदय को भगवान् का सिंहासन अनुभव करना चाहिये। और उस परम तेजस्वी, सर्व श्रेष्ठ, निर्विकार, दिव्यगुण वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमात्मा को विराजमान देखना चाहिये।

शक्ति को अपने हृदय में स्थायी रूप से बस जाने की अपने रोम रोम में रम जाने की भावना करनी चाहिये।

संकल्प के तीसरे भाग का चिन्तन करते हुये ऐसा अनुभव करना चाहिए कि वह गायत्री ब्रह्म शक्ति हमारे हृदय में निवास करने वाली भावना तथा मस्तिष्क में रहने वाली बुद्धि को पकड़ कर सात्विकता के, धर्म के, कर्त्तव्य के, सेवा के सत्पथ पर घसीटे लिये जा रही है। बुद्धि और भावना को इसी दिशा में चलने का अभ्यास तथा प्रेम उत्पन्न कर रही हैं तथा वे दोनों बड़े आनन्द उत्साह तथा संतोष का अनुभव करते हुऐ माता गायत्री के साथ साथ चल रही हैं।

गायत्री में दी हुई यही तीन भावनाएँ क्रमशः ज्ञान—योग, भक्ति योग और कर्म योग की प्रतीक हैं। इन्हीं तीन भावनाओं का विस्तार हो कर योग के ज्ञान, भक्ति और कर्म ये तीन आधार बने हैं। गायत्री का अर्थ चिन्तन बीज रूप से अपनी अन्तरात्मा को तीनों योगों की त्रिवेणी में स्नान कराने के समान हैं।

इस प्रकार चिन्तन करने से गायत्री मन्त्र का अर्थ भली प्रकार हृदयंगम हो जाता है और उसकी प्रत्येक भावना मन पर छाप जमा लेती है जिससे यह परिणाम कुछ ही दिनों में दिखाई देने लगता है कि मन कुविचारों और कुकर्मों की ओर से हट गया है और मनुष्योचित सद् विचारों एवं सत्कर्मों में उत्साह पूर्वक रस लेने लगा है। यह प्रवृत्ति आरम्भ में चाहे कितनी ही मन्द क्यों न हो पर यह निश्चित है कि यदि वह बनी रहे तो निश्चय ही आत्मा दिन दिन समुन्नत होती जाती है और जीवन का चरम लक्ष्य समीप खिसकता चला आता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ ओ३म ❀

मन्त्र शक्ति

(वैदिक विनय १० मार्गशीर्ष)

ओ३म् हस्ते दधानोनृम्णा विश्वानि, अमे देवान्धातगुहा निषीदन्। विदन्तीमत्र नरो धियन्धा, हृदा यत्तष्टान् मन्त्रां अंशसन ॥ ऋ० १. ६७. २ ॥

विनय

मन्त्रों की बड़ी महिमा है, मन्त्रों की शक्ति अद्भुत है। मन्त्र शक्ति से हम जो चाहें वह प्राप्त कर सकते हैं। यह ठीक है कि हम प्रतिदिन वेदमन्त्रों का बहुत उच्चारण करते हैं, तो भी हमें इस से कुछ प्राप्त नहीं होता। पर इस का कारण यह है कि यह मन्त्र हमारे हृदय से नहीं निकले होते। जो भक्त लोग हृदय से घड़े हुए हृदय की गम्भीर गहराई से निकले हुए, हार्दिक भावना से तीक्ष्ण हुए और पवित्र अन्तःकरण की गम्भीर सूक्ष्म तथा विस्तृत ज्ञान-शक्ति से तेजोयुक्त हुए वेद मन्त्रों को बोलते हैं, वे अपने ऐसे मन्त्रोच्चारण द्वारा उस 'ईक्षण' नामी दिव्य शक्ति को संचालित कर देते हैं जिस से बढ़ कर संसार में अन्य कोई शक्ति नहीं। इस लिए वे नर, वे सच्चे पुरुष, अपने अन्दर ही सब कुछ पा लेते हैं। वे 'धी' को धारण करने वाले, स्थित प्रज्ञ होने और निष्काम कर्म करने से हृदय (आत्मा) शुद्धि पा लेने वाले, अपने हृदय में ही सब कुछ पा लेते हैं। हृदय की गुफा में जो अग्नि देव छिपे बैठे हैं, सब ऐश्वर्यों को हाथ में लिए हुए और देवों को अपने में धारण किये हुए हमारे अग्नि देव छिपे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठे हैं उन्हें पा लेते हैं। और इस प्रकार मन्त्र शक्ति द्वारा अग्नि देव को पा लेने पर, प्रकट कर लेने पर, फिर संसार का कौन सा दिव्य ऐश्वर्य है, कौन सा गुण है जिसे ये 'नर' नहीं पा लेते। संसार के सम्पूर्ण धन ऐश्वर्यों को तो हाथ में रखे हुए, सब देवों (दिव्य गुणों) को अपनी ज्ञानमय शरण में लिये हुए ये हमारे अग्नि देव हमारे हृदय में ही स्थित हैं, पर हम हैं जो कि 'मन्त्रों' का उच्चारण करके उन्हें नहीं पा लेते, हृदय से मन्त्रोच्चारण करना तक सीख नहीं लेते, हृदय से निकले मन्त्रों से इन्हें प्राप्त कर नहीं लेते।

जप की विधि और लाभ

१—साधारण लोग प्रथम अवस्था में बालकों की तरह मुख से ज़ोर से उच्चारण करें। उनके कान और दूसरों के कान भी जाप को सुनते रहें।

२—उपांशु जप होंठ हिलते दिखाई दें, परन्तु आवाज दूसरे को सुनाई न दे। स्वयं उस आवाज को ऐसे सुनें कि कान जिह्वा होठों में लगी मालूम दे। इस एकाग्रता में जाप करने वाले को दस गुना लाभ होता है। यदि कान होठों में न लगें तो वह जाप बेखरी कहलाता है।

३—होंठ बन्द करके अन्दर जिह्वा हिलती मालूम दे। और उस आवाज़ को हृदय सुने। यह अवस्था मध्यम कहलाती है। और इस अभ्यास से हृदय में भावना जागती और दृढ़ होती है। ऐसे जाप से १०० गुणा लाभ होता है।

४—अब जबान भी बन्द हो, और नासिका द्वार से प्राण के द्वारा जप करें और भृकुटि में उस को सुनें। इससे १०००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहस्र गुणा लाभ होता है। इससे अर्थ का साक्षात् हो जावेगा।

५—श्वास रोक कर कंठ से जप करें और तालुरन्ध्र में सुनें तो उस अवस्था को प्रा 'कहेंगे'। इस का लाभ दस सहस्र १०००० गुणा है। यहां तेज का प्रकाश दीखेगा, धारणा कहलायेगी। भर्गो देवस्य धीमहि इस पाप नाशक तेज को धारण करें, यहां से अमृत मिलता है।

६—बस इन्द्रियां मूंद ब्रह्मरन्ध्र में अपनी आप होती आवाज़ अनहद शब्द रूप में अन्तर ही अन्तर सुनाई और कंठ में भी लगती है, मालूम हो तो यह अवस्था ध्यान की कहलायेगी। यदि कंठ पर डाट लगा हुआ है, और केवल वृत्ति ब्रह्मानन्द में टिक रही है, तो थोड़े काल में विलीन होकर आवाज हो सुनाई न देगी। समाधि अवस्था हो जावेगी। और यह प्रज्ञा बुद्धि उत्पन्न करेगी। यही साधक की ऊषा कहलाती है।

जब मनुष्य मुख, उपांशु, जिह्वा से जाप करता है, तो अपान के सहारे करता है। जब नासिका से करता है, तो प्राण के सहारे करता है। जब कंठ के सहारे करता है, तब उदान (प्राण, अपान) को रोक कर करता है। जब प्राण में अपान मिल जाता है, तो उस समय तालुरन्ध्र में आसानी से सुनाई देता है। और तेज प्राप्त होता है। जब ब्रह्मरन्ध्र में सुनते विलीन हो जाता है, तो प्राण अपान सुषुम्णा में चले जाते हैं तब समाधि हो जाती है।

१—इस से अधिक जप विधि की जानकारी के लिए (गायत्री रहस्य) पुस्तक पढ़ें अन्यथा मेरे गुरुदेव (वैदिक भक्ति साधना आश्रम रोहतक) की सेवा में पहुँच कर उन से विशेष अनुभव मालूम कर अपने जीवन को सफल बनावें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—साधन काल में ब्रह्मचर्य्य से रहना, एक बार भोजन करना, सात्विक खाद्य पदार्थ ग्रहण करना, एकान्त सेवन करना, स्वस्थ वातावरण में रहना, दिनचर्य्या को ठीक रखना अनिवार्य है। क्योंकि यह साधनाओं की प्रारम्भिक पूर्ति मानी गई है।

॥ ओ३म् ॥

धन्य हो ऋषि दयानन्द महाराज

एक राजा ने अपने सेवक से यह कह रक्खा था, कि तुम सायं काल के समय मेरे सोने वाले कमरे में बिस्तर बिछा आया करो। बिस्तर बिछाने का ढंग बतला दिया। नौकर राजा की आज्ञानुसार नित्य प्रति सायंकाल को राजा के कमरे में जा कर बिस्तर बिछाता, सुगन्धित पदार्थों और फूलों को छिड़क कर लौट आता। इसी प्रकार कुछ दिन बिस्तरा बिछाते बिछाते एक दिन मन में इच्छा उत्पन्न हुई कि राजा, रानी नित्य प्रति ऐसी कोमल और सुन्दर शय्या पर सोते हैं। क्या ही अच्छा हो कि, एक दिन मैं भी कुछ काल सोकर देखूं कि कैसी निद्रा आती है। इसी इच्छा को पूर्ण करने के लिए एक घण्टा पहले बिस्तर बिछाने को चला गया। बिस्तर बिछाया फिर उस पर लेट कर राजा की चादर ओढ़ ली।

सज्जनो! मिट्टी के ढेलों पर नित्य प्रति सोने वाला नौकर ऐसी कोमल शय्या पर सोया, ऐसी नींद आई कि सुध बुध न रही। दैव योग्य से उसी दिन राजा के मित्र संगी आये, राजा अतिथि शाला मैं बैठ कर आये हुए प्रेमियों से बात चीत में लीन हो गये। भोजन मंगवा कर मित्रों के साथ मिल कर खाया, फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परस्पर बातों में मग्न हो गये। रानी राजा की प्रतीक्षा में बैठी है कि महाराज जी आवें, तो फिर सोने को जाऊँ। पर अधिक काल रात्रि बीत जाने पर यह विचार मन में आया, कि महाराज जी ने भोजन कर लिया है और तो कोई सेवा करनी नहीं। केवल आ कर सोना ही होगा। उठ कर सोने के कमरे में चली गई। कमरे में पहुँचते ही देखा यह जान कर कि पलंग पर महाराजा चादर ओढ़े नींद में मस्त हैं। जगाना उचित न जान कर साथ ही पलंग पर लेट कर चादर ओढ़ ली।

अब राजा जब मित्रों से निवृत्त हो कर सोने के कमरे में पहुँचा तो पलंग पर दूसरा आदमी सोया हुआ देखकर दिल में जल भुन गया, चाहा कि खंजर उठाऊँ, दोनों का सर तन से अलग कर दूं। अब सोचना ही क्या है ? एक पतित जाति का भी ऐसी अवस्था में अपनी स्त्री को देखता है तो तत्काल सर काट देता है। फिर खंजर उठाया, पर सहम गया, खंजर को छोड़ कर महल के बाहर आकर दरबान से कहा कि शीघ्र जाकर मन्त्री को बुला लाओ।

दरबान मन्त्री जी के द्वार पर पहुंचा और मन्त्री जी को पुकारा, मन्त्री जी बाहर आये दरबान से पूछा, कैसे आये हो ? दरबान ने कहा महाराज ने मुझे आदेश किया है कि आपको शीघ्र बुला लाऊँ तो मन्त्री ने पूछा, क्या कारण है ? इतनी रात्रि बीते मुझे बुलाया है तो दरबान ने कहा महाराज, यह मैं नहीं जानता कि क्यों बुलाया है। महाराजा जी स्वयं नंगे पैर बाहर आये, हां मैं इतना कह सकता हूँ कि वह घोर क्रोधित और चिन्तित थे। अब मन्त्री ने सोचा कि कोई संकट है। मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने अन्दर जा कर कपड़े पहने, और महाराज के द्वार पर पहुंचे। दरवान ने अन्दर महाराज को सूचना भेजी, कि मन्त्री जी आ गये हैं।

मंत्री जी के आने की सूचना पा कर तत्काल राजा महल से बाहर आया। मंत्री जी ने कर जोड़ नमस्कार करते हुए पूछा, "महाराज ! सुख तो है। बहुत काल रात्रि बीत चुकी है, कैसे याद किया है"।

राजा ने कहा, "मंत्री जी, पहले एक प्रश्न का उत्तर दो कि क्या कान की सुनी हुई बात पर विश्वास करना चाहिये"।

मंत्रीः—"महाराज कान की सुनी बात पर विश्वस नहीं करना चाहिये"।

राजा—तो क्या आंखों देखी बात पर विश्वास करना चाहिये या नही।

मंत्री—महाराज आंखों देखी बात पर भी विश्वास नहीं करना चाहिये। राजा मंत्री जी से यह उत्तर सुनकर कि आंखों की देखी हुई बात पर भी विश्वास नहीं करना चाहिये, बहुत क्रोधित होकर बोला, "ओ मन्त्री, मैं बहुत भूल में रहा, जो अब तक मैंने तेरे जैसे निर्बुद्धि को मंत्रो बनाए रक्खा है"।

मंत्री—महाराज इसका कारण ?

राजा—अरे मंत्री ! यह तो हो सकता है कि सुनी हुई बात दूर की होती है, वह सत्य हो या न हो, पर आंखों सामने देखी बात पर भी विश्वास न करना क्या मूर्खता नहीं तो और क्या है।

मंत्री—महाराज मैंने जैसा उत्तर दिया है वह ठीक है।

राजा—(क्रोधित अवस्था में होकर), मंत्री को बाजू से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकड़ राज महल में ले गये और रानी तथा नौकर को एक ही पलंग पर सोता हुआ दिखाया और फिर पूछा, इन दोनों के सिरों को तन से अलग कर देना चाहिये या नहीं।

मंत्री—महाराज अभी नहीं।

राजा—आग बबूला हो कर कहा, "ओ निर्लज्ज मंत्री, तू तो महामूर्ख है, मैंने व्यर्थ ही तुझे राज्य में बुद्धिमान जान कर सारे राज्य की बाग डोर सौंप रक्खी थी। अरे एक तुच्छ जाति का मनुष्य भी यदि ऐसी अवस्था में अपनी स्त्री को पर पुरुष के साथ सोया देखता है, तो तत्काल दोनों का सर तन से जुदा कर देता है पर तुम बड़े निर्लज्ज और उस मूर्ख से भी गये गुजरे हो"।

मंत्री—हाथ जोड़ कर, 'महाराज! आप जो कुछ कहें आप को अधिकार है, पर मैंने जो कुछ कहा है सच कहा है। अब आप मुझ पर इतनी कृपा करें, केवल पन्द्रह मिनट का मुझे अवकाश देवें, फिर जो कुछ चाहें करें"।

राजा—तुम पन्द्रह मिनट में क्या करोगे?

मंत्री—महाराज, कोने में आप की कुर्सी बिछा देता हूँ आप पन्द्रह मिनट वहां शान्ति से बैठ जावें। जो कुछ भी मैं करूंगा आप भी बैठे देखते रहें। बाद में जो कुछ चाहे करें।

राजा—अच्छा देखूं, आप क्या करते हैं?

मंत्री ने कुर्सी एक कोने में बिछा कर राजा को बिठला दिया और स्वयं राजा की रानी के सरहाने पहुँच कर रानी के हाथ से कपड़ा उतारा, और उसका हाथ पकड़ कर टटोला, तो रानी चौंकी। मुख से कपड़ा उतारा तो क्या देखा मन्त्री सामने खड़ा है। यह देख कर रानी आग बबूला हो कर बोली, ओ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमक हराम मन्त्री, राजा तेरी बार बार प्रशंसा करता था कि मेरा मन्त्री सदाचारी है। अरे दुष्ट, तूने मेरे पति-व्रत धर्म को नष्ट कर दिया है। देख, अभी राजा को जगाती हूं तेरा सर तन से जुदा कराती हूं।

मंत्री—(हाथ जोड़ कर बोला) मैं कुछ कहना चाहता हूँ।

रानी—-बको, क्या बकता है ? नमक हराम दुराचारी दुष्ट।

मन्त्री—हाथ जोड़ कर बोला, आप मुझे यह बतलाइये कि आप किस के साथ सोई हुई हो ?

रानी—अरे दुष्ट ! महाराजा के साथ और किस के साथ सो सकती हूँ।

मंत्री—अच्छा, आप देखिये, साथ कौन सोया हुआ है ?

रानी—तत्काल कपड़ा उतारा, तो क्या देखा, वह तो नौकर ही है, अब सर से पांव तक पसीना पसीना हो गई, और जार जार रोने लगी, और बोली, ओ मंत्री जी, मैं तो निर्दोष हूं। भगवान को साक्षात् करती हुई कहती हूँ, मैं निर्दोष हूँ। महाराजा के दोस्त मित्र आए। महाराजा अतिथि शाला में बैठ गए, भोजन वहां मंगवाया, सबने मिलकर खाया, बहुत रात बीत चुकी थी, तो मैं सोने के कमरे में चली आई, क्योंकि कोई और सेवा न करनी थी। अब जब मैं कमरे में पहुँची, चादर ओढ़ कर सोया हुआ जो देखा, यही जान कर कि महाराज ही सोए हुए हैं। जगाना उचित न जान कर पलंग पर लेट गई। अब मैंने जो कुछ कहा है। भगवान को साक्षी करते हुए सत्य ही कहा है। अब मेरी लाज आप के हाथ में है। ईश्वर के नाम पर मेरी रक्षा करो। अब मंत्री ने रानी को एक कोने में कुर्सी बिछा कर बैठा दिया, दूसरी तरफ नौकर के सरहाने पहुँच कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस के मुख से कपड़ा उतारा और उसे थप्पड़ ज़ोर से लगाये । नौकर जागा । पांव पर पड़ा और रो कर कहने लगा, फिर नहीं सोऊँगा, भगवान् के नाम पर मुझे अब क्षमा कर दो ।

मंत्री—अरे कमबख्त, तुम सोए क्यों, यह बताओ ।

नौकर—महाराज ! रोज बिस्तर बिछाता, सुगन्धित पदार्थों व फूलों को छिड़कता था । मन में इच्छा हुई, कि कभी इस बिछोने पर एक घंटा भर मैं भी सो कर देखूं कि कैसे निद्रा आती है । तो आज एक घंटा पहले पहुँच कर बिस्तर बिछा कर लेट गया । पर ऐसी नींद आई कि सुध बुध न रही । अब मुझ पर दया करो । फिर कभी ऐसा काम नहीं करूंगा । नौकर को दरबान के सुपुर्द कर दिया गया ।

सज्जनो ! अब सोचो, विचारो, राजा की भी दो आंखें, दो कान, नाक इत्यादि सब अङ्ग ठीक थे, और मंत्री के भी । राजा तो दोनों को कत्ल करना चाहता था । और मंत्री नहीं चाहता था । अब बताओ मन्त्री में कौन सी विशेष आंख थी जिससे यह न्याय कर पाया । उत्तर है बुद्धि । प्यारे यह है तीसरी आंख, ऋषि दयानन्द महाराज ने आ कर भारत की डूबती नौका को बचाया, वेद की अमृत पवित्र वाणी को पिलाया, स्वयं उसका पुजारी बना और संसार को इस पथ पर चलने को गरज कर यह कहा, कि कान की सुनी हुई बात पर विश्वास मत करो । और आंखों की देखी बात पर भी विश्वास मत करो, एक और आंख है, जो सत्, असत, नेकी व बदी परमात्मा, आत्मा, का साक्षात् कराने वाली, पतित पावनी पाप मोचनी, वरदा वेद माता श्री गायत्री माता, इस का पूजन करो । स्वयं इस माता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पुजारी बना और संसार को इस गायत्री माता का पुजारी बनने का उपदेश किया।

——:o:——

ऋषिवर श्री स्वामी विरजानन्द जी महाराज

श्री स्वामी विरजानन्द जी महाराज गंगापुर स्थिति कस्बा करतारपुर जालंधर के रहने वाले थे, बाल अवस्था से चक्षु हीन हो गये, माता पिता के स्वर्गवास हो जाने पर भावी ने घर से विदा कर दिया। महाराज जी ऋषिकेष पहुँच कर नदी के बीच में खड़े होकर ३ वर्ष पर्यन्त गायत्री का जप करते रहे। गायत्री माता ने देव शक्ति, ज्योति प्रदान करते हुये आदेश दिया 'विरजानन्द' जाओ, अब तुम्हारा काम पूरा हो गया। "महाराज जी यह आदेश पाकर मथुरा पधारे, नदी पर स्नान करने गए। एक दक्षिणी पंडित नदी पर बैठे अष्टाध्यायी का पाठ उच्चारण कर रहे थे, उसे श्रवण करते रहे। पंडित जी जब जाने लगे तो उन का स्थान रहने का पूछ लिया। स्वामी जी नहा धो कर पण्डित जी की सेवा में पहुँचे और प्रार्थना की, कि एक बार अष्टाध्यायी का दुबारा उच्चारण कर दीजिये। स्वामी जी दुबारा अष्टाध्यायी का पाठ सुनकर गद् गद् प्रसन्न हो गये। अब वेदों की चाबी मिल गई। अब भगवान् से याचना करने लगे कि कोई पवित्र श्रद्धालु आत्मा को भेजो, ताकि वह चाबी लेकर वेद विद्या का खजाना लेकर संसार के अन्धकार को नाश करे। भगवान् ने पुकार सुनी, श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज चरणों में पहुँच गये, सत्य के पुजारी को, सत्य का अभिलाषी आदर्श शिष्य मिलगया। स्वामी विरजानन्द महाराज संतुष्ट और शान्त हो गये।

—○:o:○—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषिवर श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज

श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज गुरुदक्षिणा गुरु की भेंट कर हरिद्वार कुम्भ के मेले पर पधारे। और पाखंड खंडिनी पताका गाड़ कर जनता को वेद का संदेश सुनाया, पर लोगों ने ऋषि की आवाज को ग्रहण न किया, तो उस समय ऋषि दयानन्द महाराज ने यह नहीं कहा, कि लोग मूर्ख हैं। मेरी बात को नहीं समझ सकते। किन्तु यह विचार किया, कि मेरे अन्दर इन को गाइड (आकर्षित करने की शक्ति) नही है। अपनी कमजोरी को अनुभव करते हुए सर्व वस्त्र उतार दिये, लंगोटी, लोटा, सोटा लेकर हिमालय पर्वत की गुफाओं में चले गये। जाकर गायत्री माता का अनुष्ठान किया, रात्रि को आकाशवाणी को, या 'अल्हाम' कहो या ख्वाब कहो, सविता देव ने अपनी गुप्त शक्ति से आदेश किया। क्या आदेश ?

समुद्र के किनारे पर एक नौका (किश्ती) खड़ी है चार मनुष्य मद (शराब) में मस्त हुए आए। नौका में बैठ गये, और नौका को समुद्र में छोड़ दिया। ऋषि की दृष्टि पड़ी और देखा कि किश्ती समुद्र के ज्वार भाटा के निकट ही है, यह जाते ही नौका डूब जायेगी। चारों मनुष्यों का नाश हो जायगा, तो ऋषि दयानन्द ने तत्काल समुद्र में छलांग लगा दी। जाकर नौका को रस्से से खींचा और किनारे पर लाने लगे, तो मद में मस्त होने वाले मनुष्यों ने ऋषि दयानन्द पर ईंट, पत्थर बरसाये। भला बुरा मुंह से कहते रहे, पर ऋषि समुद्र में गोता लगाता लगाता आखिर नौका को समुद्र के किनारे पर ला कर खड़ा हो गया। और लठ हाथ में लेकर गरज कर कहा "खबरदार! किसी ने किश्ती को खोला"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारे ! बस सविता देव की इस गुप्त शक्ति को प्राप्त कर के ऋषि दयानन्द महाराज ने फिर संसार सागर में आकर वेद विद्या का प्रचार किया। जब जब भी ऋषि भक्त, ऋषि के चरणों में गये, और उपदेश की याचना की, तो ऋषि दयानन्द महाराज कागज पर लिखा हुआ गायत्री मंत्र देकर भक्तों को आदेश करते, कि १००० बार नित्यप्रति जाप किया करो।

(विशेष विवरण के लिए ऋषि दयानन्द महाराज का जीवन चरित्र लेखक श्री पंडित लेखराम जी व श्री महात्मा मुन्शीरामजी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) को देखें।

श्री महात्मा हंसराज जी महाराज

श्री महात्मा हंसराज जी महाराज ने जब बी० ए० पास किया, तो हृदय में प्रेरणा हुई, कि बिना वेतन (बगैर तनख्वाह) स्कूल की सेवा करूं। तो अपने भाई ला० मुलकराज जी को पत्र लिखा, कि मेरी इच्छा डी० ए० वी० स्कूल की बिना वेतन सेवा करने की है, पर मैं गृहस्थी भी हूँ, बिना वेतन गुजारा कैसे हो। और यह कामना मेरी कैसे पूरी हो। चिट्ठी पढ़ते ही ला० मुलक राज जी ने उत्तर दिया, कि आप बिना वेतन सेवा करो। मेरा ८०) रुपये वेतन है, ४०) रुपये आपको दूँगा और ४०) रुपये पर मैं गुजारा करूंगा। प्यारे ! यह थे भाई। पर हम तो रोजाना संध्या करते हैं, भगवान् से प्रार्थना भी करते हैं 'बाहुभ्याम् यशो बलम्' अर्थात् प्रभो हमारी भुजाओं को बलवान बनाओ जिससे यश प्राप्त करें।

प्यारे ! भुजाएँ भाई होती हैं। भुजाओं के कट जाने से मनुष्य कौड़ी का भी नहीं है, पर आज कल का जीवन हमारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसा है ? दूसरों से प्यार, और अपनों से वैर भाव (दुश्मनी)।

अब जब श्री महात्मा हंसराजजी महाराज को भाई का पत्र मिल गया, दूसरी तरफ कालिज कमेटी की तरफ से धन्यवाद पूर्वक स्वीकृति आ गई, सेवा स्वीकार है तो महात्मा हंसराजजी को कुछ उदासीनता और फिक्र पड़ गई क्यों ? यूँ, कि इतना बड़ा काम मैं कैसे कर सकूंगा, तो उसी समय महात्मा जी महाराज ने रात्रि के समय इस गायत्री माता की शरण ली और जाप में मस्त हो गये, तो बहुत काल रात्रि बीत जाने पर क्या हुआ। महात्मा जी ने अन्दर से देखा कि एक ज्योति मेरे सम्मुख आई है जो मेरी आत्मा का उत्थान कर रही है। इस दिव्य शक्ति ने मुझे बेदार, निहाल, बलवान और निर्भय बना दिया है।

———

॥ ओ३म् ॥

पतित पावनी माता

मेरे पूज्य पाद गुरुदेव श्री महात्मा प्रभु आश्रित स्वामी जी महाराज एक स्थान पर यज्ञ करा रहे थे। एक देवी आई, आ कर प्रार्थना की 'मैं बहुत दुःखी हूँ मेरा गृहस्थ नरक धाम बना हुआ है। कोई छुटकारा का मार्ग दिखाई नहीं देता। कृपा करके मुझे सन्मार्ग दिखाओ'।

महात्मा जी—पुत्री ! क्या कष्ट है ?

देवी—महाराज ! कहती तो मैं पति के सम्बन्ध में हूँ पर यह बतला दूँ कि मैं पति देव का गिला करना अपने वास्ते नरक समझती हूँ। मेरी भावना शुद्ध है। मैं उनका हित और कल्याण चाहती हूँ। मुझे दुःख और कष्ट यह है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—मेरे पति देव मांस, अण्डा, मछली सेवन करते हैं। मैंने माता पिता के घर इसे छुआ तक नहीं था। अब घर में मांस इत्यादि तैयार करके मैं नहीं देती, तो हाथापाई होती है।

२—वह शराब पीते हैं।

३—वह हुक्का सिगरेट पीते हैं।

४—जुआ खेलते हैं।

इन के इलावा वे, जब मैं सन्ध्या में बैठती हूँ और वह आजावें, तो मुझे दो-चार थप्पड़ लगा देते और कह देते हैं 'क्या भगवान को रट रखा है? यदि मैं किसी से पुस्तक लाकर पढ़ रही हूँ और वह आ जावें तो पुस्तक छीन कर टुकड़े टुकड़े कर फेंक देते हैं। ऐसी मेरी दुर्गति हो रही है। अब करूं तो क्या? कृपया इस दुख निवृत्ति का साधन बतलाइये।

महात्मा जी—क्या आपके पतिदेव अनपढ़ हैं?

देवी—नहीं महाराज! बी० ए० पास हैं। ओवरसियर थे, नौकरी छोड़ दी है। हृष्ट पुष्ट हैं। माता पिता के इकलौते बेटे हैं। न माता की सुनते हैं न पिता की।

प्यारे! अब सोचो, विचार करो कि वह बी० ए० पास, हृष्ट पुष्ट, शरीर के सब अङ्ग ठीक ठाक हैं अब वह कौन सी कला बिगड़ी हुई है जिससे मनुष्य शरीर धारण करता हुआ पशुरूप ही नहीं, पशु से भी बदतर बना हुआ है। कोई डाक्टर वैद्य जो ओषधियों या इँजेक्शनो के द्वारा इस की बिगड़ी कला को सीधा कर सके। उत्तर स्पष्ट होगा नहीं।

महात्मा जी—बेटी! आपके पतिदेव की इस बिगड़ी कला (अवस्था) को कोई वैद्य डाक्टर इत्यादि औषधियों, इन्जैक्शनों के द्वारा नहीं बना सकता है। इस बिगड़ी कला की चाबी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो तेरे पास है। परमात्मा ने देवी को दिव्यगुण सम्पन्न बनाया है। यदि वह अपने कर्त्तव्य को जान ले, तो चाहे वह अपने पति को राक्षसी जीवन अवस्था से देवता बना लेवे, या देवता को राक्षस। कोई भी अन्य व्यक्ति इस कला को दुरुस्त नहीं कर सकता। अब यदि तू इस बिगड़ी अवस्था को दुरुस्त करना चाहे, तो साधन बतलाऊं।

देवी—महाराज! अवश्य ही आपके बतलाये हुये साधन पर आचरण करूंगी।

महात्माजी—बेटी! तुम अपने हाथों से चक्की में आटा पीसो। आटा पीसते, आटा गूंधते, रोटी बनाते, सब्जी बनाते, भोजन परोसकर देते समय गायत्री मंत्र का सच्चे हृदय से जाप करती रहे। और यही भावना सामने रखो 'धियो यो नः प्रचोदयात्'। मेरे पतिदेव को सन्मार्ग पर चलाओ।

सज्जनो! देवी का कितना त्याग होता है। जिस घर में जन्म लिया, माता की गोद में पली। पिता भाई की छाया में वास किया और जिन सहेलियों की संगत में खेल कूद में मस्त रहती थी, कितना स्नेह और प्रेम था। जब (वरेण्यम्) वर लिया तो एक दम महल, माड़ी, अटारी, माता पिता, भाई, बन्धु, सहेलियां, सब को त्याग करके दीवानी, मस्तानी, मतवाली होकर अपने पति के घर में आ गई। क्या कुछ अपने पास रखा? यहां तक कि नंगो नामूस सब कुछ अपने पति के अर्पण कर दिया। अब सिवाय पति प्रेम के कोई चीज प्यारी नहीं लगती। मानो दोनों एक आत्मा बन गये। इसी त्याग भावना को देखकर यदि पतिदेव भी प्रेम का सच्चा स्वरूप बन जावे, तो सचमुच इसी गृहस्थ आश्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से दोनों पति पत्नी मोक्ष पद को प्राप्त कर लेवें। बस भगवान को पाने का मार्ग भी यही है।

देवी—महात्मा जी के आदेशानुसार अपने घर पहुँची, चक्की लाई। कभी न पीसने वाली चक्की, खुशी, खुशी आटा पीसना गायत्री का जाप करते करते मस्त मतवाला हो जाना, पूर्ण विश्वास श्रद्धा युक्त हो कर पति देव को विधिअनुसार भोजन कराने लगी। १५-२० दिन इसी प्रकार लग्न सेवा करने के पश्चात पति देव ने घर आते ही देवी से कहा, कि शराब की बोतल लाओ। देवी बोतल लाई, तो मधुर वाणी से देवी से कहा, कि इस बोतल को मेरे सामने अपने हाथों से तोड़ कर बाहर फेंक दो। मैंने आज से शराब छोड़ दिया है। देवी यह अवस्था देख कर फूली नहीं समाई और अब दिल खोल कर भगवती गायत्री के भजन में मग्न हो गई। अब कुछ दिन बाद पति देव ने आकर आदेश किया, देवी जी, यह बर्तन खान पान के चौका से एक तरफ कर दो, मैं नये बर्तन लाता हूँ। उन में भोजन बनाया करो, मैंने मांस खाना छोड़ दिया है। इसी प्रकार हुक्का, सिगरेट, जुआ खेलना छूट गया और टोबा टेक सिंह 'भक्ति साधन आश्रम' में पूजनीय गुरुदेव जी की चरण शरण में आकर रोया और कहा 'मुझे सन्मार्ग दिखलाओ'। दो मास पर्यन्त कुटिया पर रह कर सवा छः लाख गायत्री माता का जाप किया। अन्न खाना छोड़ दिया। केवल अपने हाथों सब्जी बनाना और खाना। परिणाम यह हुआ कि घर जाकर पृथक् कुटिया बनाकर चारों वेदों का यज्ञ किया। पति पत्नी एक रूप अपने गृहस्थ आश्रम को सुख धाम बनाने में मस्त हो गये।

सज्जनो! अब सोचो यह बिगड़ी कला कैसे ठीक हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सद्भावना देवी की थी, जिसने गायत्री नाम से भोजन को (हिपनोटिज्म) कर दिया है। यदि देवी रसोई को उसके नाम स्मरण में बनाये, तो रसोई, रसायन हो कर भगवान् से रसाई करा देवे। भोजन से तो भजन बनता है। यदि आज देवियां भोजन को इसी जाप द्वारा तैयार करें तो पापी से पापी भी यदि आकर वह भोजन सेवन करे तो बुद्धि सद्गुण सम्पन्न हो जावे।

प्यारे! ऐसी अनेक बीती घटनाएँ हैं परन्तु पुस्तक के अधिक बढ़ जाने के कारण बीज मात्र यह घटना लिखदी है।

श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज

जलालपुर जट्टां (पाकिस्तान) के एक सद्गृहस्थी के बालक का नाम खुशहाल था। खुशहाल को ८-९ वर्ष की आयु में स्कूल में प्रविष्ट किया गया। पर खुशहाल स्थूल बुद्धि था, न स्मृति थी, न समझ। आरम्भ में तो अध्यापक ने पाठशाला में आने का अभ्यासी बनाने के लिए कुछ न कहा, मौखिक तर्जना करते रहे अब जब वह पाठशाला में आने का पूरा अभ्यासी बन चुका, और बहुत समय बीतने पर एक दिन पिता जी ने कहा कि खुशहाल अपनी पुस्तक लाओ और मुझे सुनाओ, क्या पढ़ा है। खुशहाल पुस्तक लाया, पिता के पाठ सुनने पर पाठशून्य ही सुनाया। पिता जी क्रोध में आ गए, खुशहाल को साथ लेकर स्कूल पहुँचा, और मास्टर जी से कहा, कि मास्टर जी आपने इस को अब तक क्या पाठ पढ़ाया है, कृपा करो, इस का ध्यान करो। यह कितना बड़ा हो चला है, इस से छोटे २ बालक कितना पढ़े हुए हैं। पिता जी मास्टर जी को कह कर चले गये, अब खुशहाल पर मास्टर जी की कड़ी दृष्टि पड़ने लगी! मास्टर जी ने पाठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ाया, छुट्टी करने से पहले उससे पाठ सुना, तो चुप । अब मास्टर जी ने खूब हाथों से पीटा और अन्ततः रुखसत किया । अब खुशहाल की प्रतिदिन क्या दशा बनी ? स्कूल जाते ही मास्टर जी सर्व प्रथम उसे बुलाएँ, और कहें कल का पाठ सुनाओ, पर उत्तर कुछ भी न हो, तो मास्टर जी बुरी तरह से ताड़ना करें, और बैंच पर खड़ा कर दें । स्कूल की छुट्टी होने तक बैंच पर खड़ा रहे । अन्त में मास्टर जी पाठ सुनें तो वही दशा, फिर मार खा कर खुशहाल को छुट्टी मिलती । घर में पिता जी और स्कूल में मास्टर जी प्रति दिन मरम्मत करें । मां के पास जाये रोता हुआ तो मां मारे तो नहीं जबानी झाड़ देवे, फिर रोटी खिलावे । निदान खुशहाल के लिए यह प्रोग्राम दैनिक बन गया । खुशहाल नित्य की मार पीट से अति व्याकुल हो गया । चारों ओर अन्धेरा ही अन्धेरा नजर आया, दिल में ठानी, कि ऐसे जीने से तो मर जाना अच्छा है ।

जलालपुर जट्टां में एक नाला है जो वर्षा के दिनों में खूब भर कर बहता है । अब खुशहाल को अपने मुक्त होने का यही साधन दिखाई दिया, कि नाला में छलांग लगा कर मर जाऊँ, यही निश्चय करके नाला पर गया, छलांग लगाई, और डूब ही रहा था, कि किसी व्यक्ति ने देखा और झट नाले में कूद डूबते हुये खुशहाल को बाहर निकाला और साथ ले कर उस को पिता के हवाले किया, और कहा, कि मुंशी जी, आप का पुत्र नाले में डूब रहा था । पिता जी को बड़ा क्रोध आया, खूब पीटा । अब खुशहाल बेचारा हाल से बेहाल है, और जार जार रोता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि लिखता है—

स्याह बख़्ती में कब कोई, किसी का साथ देता है।
कि तारीकी में साया भी, जुदा इन्सां से रहता है॥

प्यारे ! खुशहाल के पिता जी श्रद्धालु थे। अतिथि सत्कार उदारता तथा प्रेम से करते थे। एक दिन श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज आये, उन्होंने उन्हें अपनी वाटिका में ठहरा दिया। रात्रि को खुशहाल से पिता जी ने कहा कि कल समय पर स्वामी जी को भोजन कराना। खुशहाल प्रातः उठा, शौचादि से निवृत्त हो स्कूल गया, तो मास्टर जी ने पाठ सुनाने को कहा परन्तु उत्तर न दे सका, आज मास्टर जी ने खुशहाल को खूब पीटा, क्योंकि नाले में डूबने का समाचार मास्टर जी को पहले मिल चुका था। अब बैंच पर खड़ा कर दिया गया। जब छुट्टी का समय आया, पाठ सुनने पर फिर भी याद नहीं था, तो फिर मार पड़ी, और मास्टर जी ने कहा, बस आज तुम बेंच पर खड़े रहो और सब स्कूल के लड़के छुट्टी होने पर घर चले गये। मास्टर जी को रजिस्टरों का काम करना था वह अपने काम में लगे रहे। आधा घण्टा बाद वह फारिग़ हुए तो फिर पाठ सुना। पाठ न आने पर फिर पीटा, और रुखसत किया।

प्यारे ! जब खुशहाल, घर पहुंचा, तो पिता जी प्रतीक्षा कर रहे थे। क्रोध में भरे हुये थे, क्योंकि और सब मोहल्ले के लड़के आधा घण्टा से पहले घरों में आ चुके थे, पिता जी ने खुशहाल के देर में पहुँचने पर देरी में आने का कारण न पूछा, बस खूब पीटना आरम्भ कर दिया। और पिता जी ने घर में एक भैंस ले रक्खी थी, उस की सेवा पानी पिलाने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ड्यूटी) खुशहाल के ज़िम्मे थी। जब पिता जी मार कर थके तो फिर पूछा, भैंस को पानी पिलाया है, तो खुशहाल ने कहा नहीं। तो फिर और मार पड़ी और पिता ने कहा, जाओ, पहले भैंस को पानी पिला लाओ। शीघ्र वापस आ जाओ। अब खुशहाल ने हाल से बेहाल रोते हुए भैंस को खोला, तालाब पर ले गया, भैंस ने पानी पिया। भैंस शक्ति वाली थी, पानी पी कर किसान के खेत में दौड़ गई, और जा कर खेत को चरना शुरू कर दिया। अब किसान ने देखा तो क्रोध से पूर्ण दौड़ता हुआ खेत में पहुँचा। खुशहाल भैंस को पकड़ रहा था, तो किसान ने खुशहाल को खूब पीटा। अब खुशहाल भैंस को ले कर घर पहुँचा, तो पिता जी क्रोध में भरे हुये बैठे थे, कि खुशहाल ने फिर बड़ी देर लगा दी हैं, जब खुशहाल आया तो देरी से आने का कारण न पूछ कर खूब पीटा, और कहा उठा रोटी, स्वामी जी को जा कर खिलाओ।

प्यारे! पाठक गण अब तनिक स्वयं सोचो, कि बिचारे खुशहाल की क्या अवस्था हो रही है। क्या खुशहाल के कान नहीं, जो पाठ नहीं सुन सकता था। क्या आंख नहीं थी; जो पाठ नहीं देख सकता था, क्या हाथ नहीं थे जो लिख नहीं सकता था, भगवान ने तो शरीर के सब अंग पूर्ण बनाये हैं और स्वास्थ्य भी अच्छा है, अब मास्टर मारे, पिता मारे, पीटे, माता धिक्कारे, क्या किसी ने मारते मारते, खुशहाल को पाठ याद कराया। क्या पाठ शरीर याद करता है, जो प्रति दिन शरीर को पीटा जाता है, क्या कोई वैद्य, हकीम, डाक्टर इस की औषधी कर सकता है, क्या डाक्टरी इंजेक्शन से ठीक हो सकता है, कि पाठ याद करना आ जावे। उत्तर नकार में होगा, और प्रत्यक्ष ही है बेचारा कोमल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चा है, बेबस है, पर उस की चिकित्सा कौन जाने।

प्यारे! वर्त्तमान काल में तो माता, पिता मास्टर डाक्टर सभी शरीर के पुजारी, भोगवादी, स्वयं नही जानते, कि हम संसार में क्यों आये हैं क्या करना है, और किधर जा रहें हैं। कहावत है:—

"गुरु बिन गत नहीं" बिना गुरु के सुख शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। शतपथ ब्राह्मण ने कहा है कि "मातृमान पितृमान् आचार्य्यवान् पुरुषोवेद"। पहला गुरु माता, दूसरा पिता, तीसरा विद्या ज्ञान का गुरु, वह ज्ञान जो परमात्मा और आत्मा को साक्षात् कराये।

वर्त्तमान काल में गुरु कहलाने वाले ये तीनों असफल हैं। आत्मा और परमात्मा का साक्षात् तो वही गुरु करावेगा, जिस ने स्वयं साक्षात् किया हुआ होगा। यह विचारने योग्य बात है। प्यारे—आप को यह जान लेना चाहिये कि वेद में अतिथि को ईश्वर का पुत्र कहा गया है, और उस को गुरु यूं कहा गया है जो अन्धेरे से प्रकाश की ओर ले जावे। अब खुशहाल बेचारा अन्धेरे में है, उस को प्रकाश कौन दिखावे। जो स्वयं प्रकाश का पुजारी हो। अब आइये, सच्चे भगवद् प्यारे सच्चे गुरु की शरण में चलें जो इस पाठ को याद कराने वाली कला को खोले।

पाठक गण! खुशहाल ने भोजन उठाया, बाटिका में पहुंच कर श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज के चरणों में नत शिर होकर नमस्कार किया, श्री स्वामी जी की दृष्टि खुशहाल के मुख पर पड़ी, आंखें लाल, हाल से बेहाल हो रहा है और शरीर निढाल है। कवि लिखता है:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घायल की गति घायल जाने, और न जाने कोय।

फारसी का कवि लिखता है:—

आंकि दारद दर दिलश, खौफे खुदा ।
आंकि पाक अस्त, अज इनादो अज़ रिया ॥
आंकि ज़ख़्मे गैर रा, मरहम शवद ।
तोहफाए नाचीज़ ईं, नज़रश बवद् ॥

————

जिस के दिल में दर्द है, इन्सान का ।
जिस के दिल में खौफ़ है, यज़दान का ॥
दूर भागे जो बुराइयों से बशर ।
तोहफाए नाचीज़ है उसकी नज़र ॥

श्री स्वामी जी महाराज ने खुशहाल से बड़े प्यार और प्रेम से पूछा, क्यों बेटा ! आज तेरी आंखें लाल, मुखड़ा कुम्हलाया हुआ है किसी ने तुमको कष्ट दिया है, प्यारे ! खुशहाल ने श्री स्वामी जी के प्यार और सहानुभूति के शब्दों को सुनते ही फूट २ कर रोना आरम्भ कर दिया, श्री स्वामी जी प्यार करें, और पूछें पर खुशहाल बेचारा रोवे, अब सारा दुःख कथा रोने के रूप में सच्चे गुरु की शरण में बैठा हुआ प्रकट कर रहा है । अहा ! धन्य हो ऋषि दयानन्द महाराज ! युग युग में तेरा भला हो । तेरह बार विष के प्याले पी कर भी विष देने वाले को अमृत पिलाया; दीन, दुखियों, अनाथों, विधवाओं, अबलाओं की आवाज को सुना, सच्चे माता पिता बन कर उनको सन्मार्ग पर चलाया, फिर क्यों न तेरे पुजारी तेरे सद्गुणों को धारण करें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारे ! श्री स्वामी नित्यानन्द जी महाराज अग्निरूप ही थे, जहां अग्नि हो, वहाँ जीवन होता है, उदारता, त्याग, पवित्रता होती है, पतित से पतित आये, पवित्र हो जाये, अब स्वामी जी महाराज ने भोजन करना छोड़ दिया, और खुशहाल के दुःख में दुःखी हो गये। अब खुशहाल ने अपनी पहले की सारी अवस्था और आज की बीती अवस्था प्रकट की, और फिर ज़ार ज़ार रोना आरम्भ कर दिया, स्वामी जी ने प्यार किया, जल पिलाया, और कहा प्यारे, बस अब तेरे संकट कट गये हैं अब तू सच्चा खुशहाल बन जायगा, और कहा एक टुकड़ा कागज का लाओ। खुशहाल ने जेब में देखा, तो कागज का टुकड़ा साफ मिल गया। स्वामी जी महाराज को भेंट किया। स्वामी जी महाराज ने रूल पेन्सिल उठाई, कागज पर गायत्री मंत्र लिख दिया, जो निम्न प्रकार है:—

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो-देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

और कहा खुशहाल यह गुरु मन्त्र है। रात के तीन बजे उठ कर जब कि तुम्हारे माता पिता सोते होंगे तुम इस गायत्री मंत्र का जाप प्रतिदिन शुरु कर दो। बस तेरी बुद्धि का विकास होगा, तेरी बुद्धि ज्ञान युक्त हो जायगी, तेरे सर्व संकट कट कर जैसा तेरे माता पिता ने तेरा नाम रक्खा है वैसा तू खुशहाल निहाल बन जायगा।

प्यारे खुशहाल ने मन्त्र लिखा हुआ ले लिया। श्री स्वामी जी महाराज ने भोजन किया, तो खुशहाल ने नमस्कार कर आशीर्वाद लेकर बर्तन उठा कर चला गया। तीन बजे रात्रि को गायत्री मन्त्र का जाप आरम्भ कर दिया। जाप करते करते दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन मास के पश्चात बुद्धि का विकास होने लगा, और पाठ खूब कण्ठ होने लगा। अब स्कूल की बैंच नीचे से निकल गई, छः मास के बाद क्लास का मानीटर बन गया, अब माता पिता का प्यार और मास्टर जी भी खुश होने लगे, अब खुशहाल, खुशहाल बन रहा है। परीक्षा में पास होकर ३०) रु० का सेवक उप सम्पादक आर्य गज़ट समाचार पत्र के बन गये, अब खुशहाल से खुशहाल चन्द बन गये। फिर सम्पादक बन गये, बाद में "मिलाप" पत्र जारी किया, अब लाखों रुपये के स्वामी बन गए। धर्मपत्नी मिली तो धर्म युक्त, सन्तान भगवान ने दी तो देश भक्त, संग मिला तो महान आत्माओं का, अब लाला खुशहाल चन्द खुर्सन्द बन गये। अब तप त्याग का जीवन बिताने लगे। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा लाहौर की पचास साला सिलवर जुबली मनाने की घोषणा कर दी गई, तो लाला खुशहालचन्दजी वेद प्रचारार्थ धन संग्रह करने के लिए लाहौर से झोली पसार कर चल पड़े, श्री बाबा गुरमुख सिंह जी के द्वार पर भी पहुँचे, तो उन्होंने कहा, कि जिस कदर धन वेद प्रचारार्थ आप अन्य स्थानों से संग्रह कर लावेंगे, उसी कदर मैं दे दूँगा। यह सुनते ही लाला खुशहाल चन्द जी वहां से चल पड़े, तो सवा लाख रुपये एकत्रित कर लाये, तो श्री बाबा गुरमुखसिंह जी ने सवा लाख रुपयों के नोटों का हार लाला खुशहालचन्द जी के गले में डाल दिया, यह अढाई लाख रुपया वेद प्रचारार्थ सभा को भेंट किया।

अब तप त्याग का जीवन बिताने लगे। हैदराबाद सत्याग्रह के डिक्टेटर बन कर गए। जेल में जो सत्याग्रह करने वालों की सेवा और रक्षा की और स्वयं तप किया, तो जेल में ही भगवान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने महात्मा का अधिकार दे दिया, अब महात्मा खुशहालचन्द खुसन्द बन गये। कहावत है 'जो जागता है सो पाता है" अब महात्मा खुशहालचन्द जी वेद-भक्त, वेद माता के सच्चे पुजारी अज्ञातवास करने लगे। शरणागत ने शरण में ले लिया, उसने वह सच्चा रूप दे दिया। क्या ? अग्नि का बाना पहना दिया। अब महात्मा "आनन्द स्वामी जी महाराज" हो गये हैं। अब जहां जाते हैं भगवान वेद की अमृत वाणी कल्याणी का गीत गाते गाते दीवाने मस्ताने होकर आनन्द मग्न हो जाते हैं। और श्रोता नर नारी इस अमृत से तृप्त हो जाते हैं।

प्यारे ! स्वामी जी ने यह आप बीती घटना लाला गणेश दास जी प्रोप्राइटर भारत ग्लास कम्पनी कुतुब रोड देहली के मकान पर जवाहर नगर में जिस का नाम "प्रयाग निकेतन" है उपदेश में सुनाई थी। अन्त में आपने कहा—तीन वेदों ने तो इस गायत्री मन्त्र का गीत गाया है, चौथे अथर्व वेद ने इस मन्त्र का महात्म्य गान किया है। आज मेरी आयु ६८ वर्ष की हो चुकी है गोया ५८ वर्ष मुझे इस माता का पूजन करते २ बीत गये पर इस माता ने सचमुच मेरे नाम खुशहाल को सार्थक बना दिया है, पर यहां तक नहीं, अथर्ववेद का० १९ सू० ७१ मं० १ में जो मन्त्र आया वह इस प्रकार है—

ओ३म् स्तुता मया वरदा वेद माता प्रचोद-यन्ताम् पावमानी द्विजानाम्, आयुः, प्राणं, प्रजां पशुम् कीर्त्ति, द्रविणं ब्रह्मवर्चसं मह्यं दत्वा ब्रजत ब्रह्मलोकम् ।

गायत्री माता अपने उपासक को आयु, प्राण, सन्तान, नौकर, चाकर, पशु, धन, सम्पति कीर्ति, और ब्रह्म तेज प्रदान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके प्रभु चरणों में पहुंचा देती है।

इस गायत्री माता ने मुझ मूढ़ बुद्धि अज्ञानी को शुद्ध बुद्धि प्रदान की, और ज्ञान मार्ग दिखाया, आयु, स्वास्थ्य, सन्तान, पशु, गाय, दूध, धन, अन्न, यश कीर्ति, अपना भक्ति रस, अन्त में इस वेद माता का जो आदेश था वह मुझे वेष पहना दिया, एक घर का पुजारी था अब विश्व का पुजारी बना दिया।

प्यारे! आओ इस गायत्री माता की शरण में अमृत समय में अपनी बुद्धि को शुद्ध और निर्मल बनाओ। मृत से अमृत को प्राप्त करो। यही गुरु मन्त्र है इस को वेद मुखमाता तथा सावित्री कहते हैं जो सूक्ष्म से शून्य अवस्था में रक्षा करती है, भगवान को साक्षात् कराती है।

ओ३म

गायत्री साधना से श्री स्मृद्धि और आपत्तियों का निवारण

१—झाँसी निवासी पं० लक्ष्मी कान्त झा व्याकरण साहित्याचार्य लिखते हैं, "बचपन में ही मुझे गायत्री पर श्रद्धा हो गई थी और उस समय से एक हज़ार मन्त्रों का नित्य जाप करता हूँ। इसी के प्रताप से मैंने साहित्याचार्य, साहित्यरत्न तथा वेद शास्त्री आदि परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं तथा संस्कृत कालिज झांसी का प्रिंसिपल बना। मैंने एक सेठ के १६ वर्षीय मरणासन्न पुत्र के प्राण गायत्री जाप के प्रभाव से बचते हुये देखे हैं, जिस से मेरी श्रद्धा और भी दृढ़ हो गई है।

२—प्रयाग के पास जगुनी पुर ग्राम में रामनिधि शास्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामक एक विद्वान् ब्राह्मण रहते थे। वे अत्यन्त निर्धन थे। पर गायत्री साधना में उनकी बड़ी तत्परता थी। एक बार नौ दिन उपवास करके उन्होंने नवान्ह पुरश्चरण किया। पुरश्चरण के अन्तिम दिन अर्ध-रात्रि को भगवती गायत्री ने बड़े दिव्य स्वरूप में उन्हें दर्शन दिया और कहा—तुम्हारे इस घर में अमुक स्थान पर स्वर्ण मुद्राओं से भरा घड़ा रक्खा है उसे निकाल कर अपनी दरिद्रता दूर करो। पण्डितजी ने घड़ा निकाला और वे निर्धन से धनी हो गये।

३—गुजरात के मधुसूदन स्वामी का नाम सन्यास लेने से पूर्व मायाशंकर, दयाशंकर पंडया था, वे सिद्धपुर रहते थे। आरम्भ से वे २५)रु० मासिक के नौकर थे। उन्होंने हर रोज एक एक हजार गायत्री के जाप से आरम्भ करके चार हजार तक बढ़ाया फलस्वरूप उनकी पदवृद्धि हुई। वे बड़ौदा राज्य रेलवे के असिस्टेण्ट ट्रैफिक सुपरिंटेण्डेण्ट के ओहदे पर पहुँचे। उनका वेतन तीन सौ रुपया मासिक था उत्तरावस्था में उन्होंने संन्यास ले लिया था।

४—प्रयाग विश्व विद्यालय के प्रोफेसर क्षेत्रेशचन्द्र चट्टोपाध्याय का भांजा उनके यहाँ रह कर पढ़ता था। इण्टर परीक्षा के दौरान में लौजिक के परचे के दिन वह बहुत दुखी था क्योंकि उस विषय में वह बालक कच्चा था। प्रोफेसर साहब ने उसे प्रोत्साहन देकर परीक्षा देने भेजा और स्वयं छुट्टी लेकर आसन जमा कर गायत्री जपने लगे। जबतक बालक लौटा तबतक बराबर जप करते रहे। बालक ने बताया कि उस का वह पर्चा बहुत ही अच्छा हुआ। और लिखते समय उसे लगता था मानो उसकी कलम पकड़ कर कोई लिखता चलता है। वह बहुत अच्छे **नम्बरों** से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ।

५—कलकत्ता के सा० मोड़कमल केजड़ी बाल आरम्भ में जोधपुर राज्य के एक गांव में १२ रु० मासिक के अध्यापक थे। एक छोटी पुस्तक से आकर्षित हो कर उन्होंने गायत्री जाप का नित्य नियम बनाया। जाप करते २ अचानक उनके मन में प्रेरणा हुई कि मुझे कलकत्ते जाना चाहिये वहां मेरी आर्थिक उन्नति होगी। निदान वे कलकत्ते पहुंचे। वहां व्यापारिक क्षेत्रों में वे नौकरी करते रहे और श्रद्धा पूर्वक गायत्री साधना चलाते रहे, रूई के व्यापार में उन्हें भारी लाभ हुआ और थोड़े ही दिन में लखपति बन गये।

६—अम्बाला के मोतीलाल महेश्वरी का लड़का कुसंग में पड़कर ऐसी बुरी आदतों का शिकार हो गया, जिससे उनके प्रतिष्ठित परिवार पर कलंक के छींटे पड़ते रहें। महेश्वरी जी ने दुःखी हो कर गायत्री की शरण ली। उस तपस्या के प्रभाव से लड़के की मति पलटी और अशांत परिवार में शान्ति का वातावरण उत्पन्न हो गया।

७—गायत्री प्रधानतया बुद्धि को शुद्ध प्रखर और सुमन्नत करने वाला मन्त्र है। मन्द बुद्धि स्मरण शक्ति की कमी वाले लोग इससे विशेष रूप से लाभ उठा सकते हैं। जो बालक परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाते हैं, पाठ ठीक प्रकार याद नहीं कर पाते उनके लिए निम्न उपासना बड़ी उपयोगी है।

सूर्योदय की प्रथम किरणें पानी से भीगे हुए मस्तक पर पड़ने दें। पूर्व की ओर मुख करके अर्ध खुले नेत्रों से सूर्य का दर्शन करते हुये, आरम्भ में तीन बार ॐ का उच्चारण करते हुये गायत्री का जप करें। कम से कम एक माला (१०८ मन्त्र) अवश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जपने चाहियें । पीछे दोनों हाथों का हथेली भाग सूर्य की ओर इस प्रकार करें मानों आग पर ताप रहें हैं। इस स्थिति में बारह मंत्र जप कर हथेलियों को आपस में रगड़ना चाहिये और उन उष्ण हाथों को मुख, नेत्र, नासिका, ग्रीवा, कर्ण, मस्तक आदि समस्त शिर भागों पर फिराना चाहिये ।

८—सोनीपत--जिला रोहतक के वैद्य जयकृष्ण जी का सपुत्र प्रेम कुमार जिस की आयु लग भग बारह-तेरहां वर्ष की होगी—वह हिन्दू हाई स्कूल में छटी कक्षा में पढ़ता था । ३-२-५४ अमावश के रोज़ सायंकाल को स्कूल में छुट्टी होने पर प्रेमकुमार अपने घर माडल टाऊन में आ रहा था, चलते २ मार्ग में एक जैन्टल मैन ने उसे कहा, तुमको पिता जी बुला रहे हैं। प्रेमकुमार ने पूछा वह कहां हैं ? तो जैन्टल मैन ने उंगली का इशारा कर बतलाया, कि फलानी जगह पर, वह स्थान स्टेशन के दक्षिण दिशा में लाईन पार था वहां पर सवालाख गायत्री का यज्ञ हो रहा था, प्रेम कुमार के पिता जी इस में कुछ सेवा का भाग लिया करते थे, प्रेमकुमार के विचार में उस के पिता जी यज्ञ में होंगे तो जैन्टलमैन के साथ हो लिया। जब रेलवे लाईन के पार हुए तो मिट्टी के खोदे जाने पर बड़े २ गढ़े थे। अन्धेरा हो चुका था । जैन्टल मैन ने प्रेम कुमार से कहा इसी गढ़े में बैठ जाओ । प्रेम कुमार ने कहा क्यों ? जैन्टलमैन ने कहा कि यदि अब तू कुछ बोलेगा तो मैं गर्दन दबा कर तुम्हें यहां मार डालूंगा। चुपके से बैठ जाओ। बेचारा प्रेमकुमार निर्बल था । अमावश को घोर अन्धेरी रात्रि थी, बैठ गया। थोड़ी देर के बाद उसने प्रेमकुमार की आंखों और मुंह पर पट्टी बांध दी। और उसे कन्धे पर उठा लिया, और कहा,यदि तुम ने शोर किया, तो इसी गढ़े में दे मारूं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गा। अब बेचारा प्रेम कुमार निसहाय है जैन्टलमैन ने उसे उठा कर कहीं किसी झोंपड़ी में ले जा कर बैठाया और स्वयं भी साथ बैठ गया।

अब प्रेम कुमार के घर पर न लौटने पर माता पिता परिवार बेचैन, मित्र इत्यादि साईकलों पर सवार सारे शहर के कोने २ में तलाश कर रहे हैं। पर अब घर में परिवार सारा शोचनीय अर्थात शोकमय बना हुआ है। रात के दस बजने वाले हैं। सारी कौलोनी माडल टाऊन में हाहा कार मचा हुआ है। परन्तु प्रेम कुमार कहीं से न मिला। प्यारे प्रेम कुमार को गायत्री का उपदेश मिला हुआ था। वह जाप किया करता था। उसने यह सुन रखा था कि गायत्री मन्त्र पतित पावन कष्ट निवारण त्रयलोक तारन हार है वह इस संकट काल में सोचने लगा कि कैसे छुटकारा पाऊँ। घर में बेचैनी,व्याकुलता होगी। तो अकस्मात अन्दर से प्रेरणा हुई,तो गायत्री का जाप शुरू कर दिया इधर अब जैन्टलमैन को नींद आने लगी। प्रेम कुमार ने धीरे २ आँखों और मुख से पट्टी खोली—क्या देखा कि जैन्टलमैन नींद में ही मस्त है। तो वह चुपके से बाहर निकला घोर अन्धेरी रात्रि थी, हाथ को हाथ दिखाई न देता था। बेचारा प्रेम कुमार गढ़ों में गिरता उठता दौड़ता सामने दूर से स्टेशन की संगनल की लाईट पर दृष्टि पड़ तो उसी के लक्ष्य पर सीधा दौड़ा, हांपते २ माडल टाऊन में पहुँचा लोगों के समूह थे। जब प्रेम कुमार को देखा और समाचार बीता हुआ सुना तो सभी गायत्री माता का गीत गाने लगे। अब शोकमय घर शादी का रूप धारण कर गया। यह है गायत्री माता की शक्ति—वह स्वीता देव जो सूक्ष्म से शून्य अवस्था में रक्षा करता है किस प्रकार से प्रेम कुमार को इस घोर संकट में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से मुक्त कराया।

सज्जनो यदि आरम्भ से इस गुरुमन्त्र (गायत्री) का बोध बालकों को घर-घर, स्कूल पाठशालाओं में दिया जावे तो संसार में जो संकट और विपत्तियां छाई हुई हैं। शुद्ध बुद्धि हो जाने पर सुख शान्ति का धाम बन जावे।

९—स्वर्गीय पण्डित आत्म देव जी भजनीक उपदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने मुझे बतलाया कि ज़िला मियांवाली आर्य समाज के मन्त्री महाशय भगवानदास अपने पिता जी के साथ शहर से बाहर जा रहे थे। वहां पर एक (मसूद) जाति है। जो कि जीवित नर नारी को पकड़ ले जाकर पहाड़ की गुफाओं में बन्द कर देते हैं। और फिर उन से अपने सम्बन्धियों के नाम पत्र लिखवा कर भिजवाते हैं कि इस कदर (हज़ार—दो हज़ार—दस हज़ार) रकम अमुक जगह पर अमुक तिथि तक जमा करा दो। तब हमारा छुटकारा होगा वरना हमें मार दिया जावेगा। प्यारे—इन दोनों पिता, पुत्र को पकड़ लिया और मारते २ गुफा में ले गये। अब उन्होंने कहा कि तुम दोनों में से एक वापस घर चला जावे, इस कदर रुपया अमुकस्थान पर अमुक तिथि तक रकम जमा करा दो। फिर पीछे वाले को हम छोड़ देवेंगे। अब पिता पुत्र से कहता है कि तुम चले जाओ। पुत्र कहता है आप जाओ मैं आप को यहां गुफा में बन्धा छोड़ कर नहीं जा सकता, अन्त में मसूद लोगों ने कहा कि बाप चला जावे। चुनाचे बूढ़े बाप को स्वतंत्र कर दिया गया।

अब केवल एक मसूद को मन्त्री के साथ बैठा कर, दूसरे मसूद लोग बाहर से दरवाजा बन्द कर ताला लगा कर चले गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारे:—मन्त्री ईश्वर विश्वासी व गायत्री माता का सच्चा पुजारी था उसने बैठे २ गायत्री जाप आरम्भ कर दिया। कुछ देर के पश्चात उसे टट्टी करने की इच्छा हुई। तो उसने मसूद से कहा कि मुझे टट्टी आई है। तो मसूद ने लोहे का तेषा जिस से लकड़ी को काटा और छिला जाता है—मन्त्री को दिया, और कहा सामने एक कोने में इस से गढ़ा खोद कर उस में टट्टी कर लो, फिर उस पर मिट्टी डाल कर दबा दो।

अब मन्त्री तेषा ले कर एक कोने में चला गया गढ़ा खोदा और टट्टी करने लगा तो अन्दर से प्रेरणा हुई और भर्गा रूप धारण कर आया। तत्काल टट्टी दबा कर उठा तो क्या देखा, मसूद सोया हुआ है मन्त्री ने उस के निकट पहुँचने पर बड़े जोर से वही तेषा उसके सर पर दे मारा, इस प्रकार दो चार बार मारने से उस का दम समाप्त हो गया। अब बाहर निकलने के वास्ते यह विचार आया कि इसी तेषे से दरवाजे को तोड़ूं चुनाचे दरवाजे को तोड़ा। बाहर निकलने पर मसूद के साथ जो पिस्तौल रखा था। उसे हाथ में ले लिया, फिर दौड़ता २ हांफता २ शहर पहुँचा, पोलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई। पोलिस ने मौके पर आकर लाश को उठाया। मन्त्री को इनाम मिला। मन्त्री जी की बीती अवस्था और गायत्री माता (भर्गा) का प्रतापसुनकर लोग गद्‌ २ प्रसन्न हुये। घर २ में गायत्री माता पर विश्वास होने लगा।

प्यारे:—अब सोचो किस ने मन्त्री जी की रक्षा की किस संकट और विपित्ति में फंसा हुआ था। किस प्रकार सवीता देव अपने शरणागत की रक्षा और सहायता करता है।

१०—शिमला:—लाला दयानन्द बी० ए० जो ऐअकाऊन्टस जी आफिस में कर्मचारी थे। वह सुप्रिटेन्डैन्टी के परीक्षा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयारी कर रहे थे। परीक्षा आरम्भ हुई, पहला परचा देकर, सायंकाल को मेरे पास आया मुझ से यूं कहा कि महाराज ! मैं तीन वर्ष से लगातार इस परीक्षा की तैयारी करता आ रहा हूं। आज जो पहला परचा हुआ है यह मुख्य परचा है। इस से पास हो जाने पर मैं पास हो सकता था परन्तु मेरा आज का ही परचा खराब हो गया है! यूं कह कर वह उदास हो गया।

मैंने कहा:—दयानन्द, क्या आप चाहते हो कि तुम परीक्षा में पास हो जाओ—बोला, अवश्य महाराज ! मेरा तो किया कराया इस प्रश्न पत्र में समाप्त होगया है। कोई उपाय बतला दें मैं पास हो जाऊं। मैंने कहा:—उपाय करोगे—बोला—अवश्य करूंगा तो मैंने कहा—आप सवालाख जाप गायत्री माता का शुरू कर दो—परिणाम निकलने में दो चार दिन पूर्व पूर्ण कर लो तो स्वीता देव की कृपा से आप सफल हो जाओगे, तुम गायत्री माता का जाप अमृत वेला में उठ कर किया करो।

दयानन्द ने कहा महाराज ! मैंने आठ घण्टे आफिस का कार्य करना होता है। परीचा का परिणाम दो मास में निकल आवेगा मैं कैसे इतने काल में सवालाख जाप पूरा कर सकूंगा।

मैं ने कहा—आप की धर्म पत्नि आप के साथ मिल कर जाप करे। स्त्री पुरुष के शरीर दो और आत्मा एक होती है। तो बोला—बहुत अच्छा अब स्त्री-पुरुष गायत्री जाप करने में मग्न हो गये—अब जो उन का पत्र आया है ! निम्न लिखित है।

मार्किट रोड 109/6 शिमला
१५-११-१९५३.

पूज्य स्वामी जी,

चरण बन्दना

आप को यह जान कर हर्ष होगा कि मैं सुप्रिटेन्डैन्टी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया हूँ। नतीजा आने से दो दिन पूर्व मैंने और मेरी धर्म पत्नि ने मिल कर सवालाख गायत्री माता का जाप पूर्ण कर लिया था। मैं समझता हूँ, कि परम पिता परमात्मा की कृपा और आप के आशीर्वाद से मैं पास हुआ हूँ। सचमुच गायत्री माता में अद्भुत शक्ति है। मैं इस का जाप सारी आयु किया करूंगा। आप मुझे ऐसी दीक्षा लिखें, जिस से मैं अपने जीवन को सफल बना सकूं। मेरी बड़ी तीव्र इच्छा है कि मैं वेदों को पढ़ूं। आप मुझे लिखें कि मैं किस का लिखा हुआ वेदों का भाष्य पढ़ूं क्योंकि मैं संस्कृत तो पढ़ा नहीं हूं। मैं अब संस्कृत भी पढ़ूंगा। मैं १०-१२-५३ से सुपरिटेन्डैंट लग गया हूँ। आप का धन्यवाद करता हूं। मेरी धर्म पत्नि की ओर से आप-को बहुत २ नमस्कार--मेरे योग्य कोई सेवा हो तो अवश्य लिखें।

आप का सेवक
दयानन्द
शिमला

११—अहम्मद पुर लमां-रयासत बहावल पुर। मुखी ऊधा राम जी के यहां मैंने यजुर्वेद का यज्ञ कराया था उस में महाशय गिरधारी लाल जी अहम्मद पुर शरकिया निवासी भी सम्मिलित हुये, यज्ञ के दिनों में यम नियम का पालन करना आवश्यक होता है। यज्ञ काल के पश्चात यज्ञ व्रति मौन में रहते और गायत्री जाप, स्वाध्याय करते रहते हैं। महाशय गिरधारी लाल जी जो गायत्री माता और यज्ञ के सच्चे पुजारी हैं। मुझ से आ कर कहा, कि मुझे आज्ञा दें, कि मैं इस यज्ञ के दिनों में सवालाख गायत्री का जाप पूरा करूं। मैंने कहा यह श्रेष्ठ कार्य है। आप श्रद्धा पूर्वक करें। वह जाप में मग्न होगये। वह एक दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पोस्ट कार्ड लिखकर मेरे सम्मुख लाये जो कि डाक में भेजना था मैं ने उसे पढ़ा उसमें निम्न लेख था यह पत्र अमृतसर के किसी आढ़ती के नाम लिखा गया था।

श्रीमान जी

नमस्ते

मैंने अमुक तिथि को आप से बज़ाजी का माल संगवाया था, माल को खोला, देखा तो उस में २॥।–)॥ का कपड़ा सम्भालने पर न मिला तो मैंने आप को लिखा। आप ने उत्तर दिया कि हम माल पूरा भेज चुके हैं। अब हम जिम्मेदार नहीं हैं। आप का उत्तर आने पर फिर मैं ने बीचक का टोटल (जोड़) का हसाब किया, तो दस रुपये आप के मेरे यहां बचने लगे तो मैं बड़ा खुश हुआ कि वाह भगवान क्या कृपा करता है ! मेरे २॥।–)॥ २।१३।६ रुपये देने से आढ़ती विम्मुख हुआ, तो मुझे उस के बदले में १० रुपये मिल गये । अब एक वर्ष व्यतीत हो गया है।

श्रीमान जी ! आज मैं गायत्री माता की शरण में बैठा हूँ। तो मुझे माता ने जागृत किया और डान्ट दी है कि यह चोरी क्यों की हुई है। अब मैं आप से कर जोड़ क्षमा चाहता हूं और ६=)॥ रुपये बाकी की रकम मनी आर्डर कर सेवा में भेज रहा हूँ। इसे वसूल करें और मुझे क्षमा करें।

गिरधारी लाल

सज्जनो ! यहां तक ही नहीं, किन्तु बाल्य काल अनजान अवस्था की बीती हुई भूलें सामने आईं किसी से दो पैसे, किसी से दो आने-चार आने इत्यादि लिये गये वह न दिये गये थे याद आये, तो घर २ दूकान २ पर जा कर नम्रता पूर्वक दिये । और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षमा मांगी--यह है सच्ची गायत्री वेद माता। जो मती के बनाने वाली शुद्ध-पवित्र, पावमान करने वाली—शुद्ध पवित्र माता पहले शरणागत को शुद्ध निर्मल करती है। फिर अपनी गोद का वास दे कर अपना अमृत रस पान करा कर शान्त चित करके आवा गमन के चक्कर से मुक्त कराती है।

———

ओ३म्

महिलाओं के लिए

विशेष साधनायें

नर तत्व और नारी तत्व एक दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरा अपूर्ण है, दोनों का महत्व, उपयोग, अधिकार और स्थान समान हैं। वेदमाता गायत्री की साधना का अधिकार स्त्रियों को पुरुषों के समान ही है। जो यह कहते हैं कि गायत्री वेद मन्त्र होने से उसका अधिकार स्त्रियों को नहीं है वे भारी भूल करते हैं। प्राचीन काल में स्त्रियां मन्त्रद्रष्टा रही हैं। वेद मन्त्रों का उनके द्वारा अवतरण हुआ है। गायत्री स्वयं स्त्रीलिंग है। फिर उनके अधिकार ना होने का कोई कारण नहीं। हां, जो अशिक्षित हीनमति अपवित्र स्त्री शूद्र हैं वे स्वयमेव इधर प्रवृति नहीं रखतीं न महत्व समझती हैं इस कारण वे अपनी निज की मानसिक अवस्था से ही अधिकार से वंचित हो जाती हैं।

गायत्री विपरीत परिस्थितियों से लड़ने और उन्हें परास्त करने का साहस एक ऐसी शक्ति है जो संकट ग्रस्त का शीघ्र निस्तार कर देती है। गायत्री साधना में ऐसी शक्ति उत्पन्न करने की पूरी २ क्षमता है। वह ऐसे साधन, निमित्त और कारण भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनिर्मित कर देती है, जो संकट को परास्त कर दे। संकट एक प्रकार का राक्षस है, उस का दमन करने के लिये प्रचण्ड शक्ति का रौद्र रूप ही सफल हो सकता है। गायत्री के इस विघ्न विदारक प्रचण्ड स्वरूप को "दुर्गा" के नाम से पुकारते हैं। दुर्ग अर्थात् संकट, जिसके द्वारा निवारण हो वह दुर्गा। दुर्ग अर्थात किला, जो किले के समान अनिष्टों से सुरक्षित रखे, वह दुर्गा। क्लीं तत्व, तमोगुण की गायत्री धारा दुर्गा कही जाती है। विपत्ति के समय वह हमारी सहायता करती है। उठने की सामर्थ्य उत्पन्न करना और आवश्यक सुविधा सहायता जुटाना वह विपत्ति ग्रस्त साधकों के लिये भगवती की ओर से दो वरदान दिये जाते हैं, और इन दो पतवारों से उसकी नाव पार हो जाती है।

अमरावती के सोहन लाल मेहरोत्रा की स्त्री को भूत बाधा बड़ी रहती थी, बड़ा कष्ट था, हजारों रुपया खर्च हो चुका था। स्त्री दिन २ घुलती जाती थी। एक दिन मेहरोत्रा जी से स्वप्न में उनके पिता ने कहा—"बेटा, गायत्री का जाप कर, सब विपत्तियां दूर हो जायेंगी"। दूसरे दिन से उन्होंने वैसा ही किया। फल स्वरूप भूत उपद्रव शान्त हो गये और स्त्री निरोग हो गई। उनकी बहिन की ननद भी इसी उपाय से भूत बाधा से मुक्त हुई।

बांसबाड़ा के सीताराम मालवीय को क्षय रोग हो गया था। "ऐक्सरे" होने पर डाक्टरों ने उनके दोनों फेफड़े खराब हो गये बताये थे। दशा निराशाजनक थी। सैंकड़ों रुपयों की दवायें खा लेने पर भी जब कुछ लाभ न हुआ तो एक विद्वान् वयोवृद्ध के आदेशानुसार उन्होंने गायत्री का जाप चारपाई पर पड़े २ ही प्रारम्भ कर दिया, और मन ही मन प्रतिज्ञा की, यदि मैं बच

CC-0. In Public Domain: Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया तो अपना जीवन देश हित में लगा दूँगा । प्रभु की कृपा से वह बच गये । धीरे २ स्वास्थ्य सुधरा और बिल्कुल भले चंगे हो गये । तब से अब तक वह आदिवासियों भीलों तथा अन्य पिछड़ी हुई जातियों के लोगों की सेवा में लगे हुये हैं ।

दिल्ली के एक अत्यन्त उच्च परिवार की सुशिक्षित देवी श्रीमती चन्द्रकान्ता जेरथ बी० ए० गायत्री की अनन्य साधिका हैं । उन्होंने इस साधना द्वारा बीमारों की पीड़ा दूर कर देने में विशेष सफलता प्राप्त की है । दर्द से बेचैन रोगी उनके अभि-मन्त्रित हस्त स्पर्श से आराम अनुभव करता है । इन्हें गायत्री में इतनी तन्मयता है कि सोते हुये भी जप अपने आप होता रहता है ।

हैदराबाद "सिन्ध" की श्रीमती विमला देवी की सास बड़ी कर्कश स्वभाव की थी और पतिदेव शराब वेश्यागमनादि बुरी लतों के उपासक थे, बेचारी देवी को आये दिन सास तथा पति की गाल गलौच तथा मारपीट का सामना करना पड़ता था । इससे वह बड़ी दुःखी रहती और कभी २ आत्म हत्या की बात सोचती । विमला की बुआ ने उसे विपत्ति निवारिणी गायत्री माता की उपासना करने की शिक्षा दी । वह करने लगी, फल आशातीत हुआ । थोड़े ही दिनों में सास और पति के स्वभाव में आश्चर्यजनक परिवर्तन हो गया । एक दिन पति को बड़ा भयानक स्वप्न दिखाई दिया कि उसके कुकर्मों के लिये उसे मृत्यु तुल्य कष्ट दे रहे हैं । जब स्वप्न टूटा तो उस स्वप्न का आतंक कई महीने उन पर रहा और उसी दिन से स्वभाव सीधा हो गया । अब वह परिवार पूर्ण प्रसन्न और सन्तुष्ट है । विमला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सुदृढ़ विश्वास है कि उसके घर को आनन्दमय बनाने वाली गायत्री ही है। वर्षों से उनका नियम है कि गायत्रीं जपे बिना भोजन भी नहीं करती।

बारीसाल "बंगाल" के उच्च अफसर की धर्मपत्नी श्रीमती हेमलता चटर्जी को ३३ वर्ष की आयु तक कोई सन्तान न हुई, उनके पतिदेव तथा घर के अन्य व्यक्ति इससे बड़े दुःखी रहते और कभी २ उनके पति के घर दूसरा विवाह करने की चर्चा होती थी। हेमलता को सब से अधिक मानसिक कष्ट रहता था और उन्हें मूर्च्छा का रोग हो गया था, किसी साधक ने उन्हें गायत्री साधना की विधि बताई। वे श्रद्धा पूर्वक उपासना करने लगीं। ईश्वर की कृपा से एक वर्ष बाद उनके कन्या उत्पन्न हुई, जिसका नाम गायत्री रक्खा गया। इसके बाद दो वर्ष के अन्तर से दो पुत्र और हुये, तीनों बालक स्वस्थ हैं। इस परिवार में गायत्री की बड़ी महानता है।

जैसलमेर की श्रीमती गोनाबाई को १६ वर्ष की आयु से मृगी हिस्टेरिया के दौरे आते थे। आठ वर्षों से वह इस रोग से बहुत दुःखी थी। उन्हें उपवास पूर्वक गायत्री जप करने की विधि बतलाई गई। अन्न त्याग कर फल और दूध पर निर्वाह करने लगी। चार मास के भीतर उनका आठ वर्षपुराना मृगी रोग दूर हो गया।

गुजरानवाला की सुन्दरी बाई को पहिले कण्ठमाला का रोग था, वह थोड़ा ठीक हुआ तो प्रदर रोग भयंकर रूप से हो गया। हर घड़ी लाल, पीला, सफेद पानी बहता रहता। कई साल इसी प्रकार बीमार पड़े रहने के कारण उनका शरीर अस्थिमात्र रह गया था। चमड़ी और हड्डियों के बीच मांस का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम भी दिखाई न पड़ता था। आंखें गड्ढे में धंस गई थी। घर के लोग उनकी मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगे थे। ऐसी स्थिति में उन्हें एक पड़ोसिन ब्राह्मणी ने बताया कि गायत्री माता तरुण तारणी है, उसका ध्यान करो। सुन्दरीबाई के मन में वह बात जच गई, वह चारपाई पर पड़े २ जप करने लगी। ईश्वर कृपा से वह धीरे २ स्वस्थ होने लगी। आठ मास में वह बिल्कुल निरोग हो गई। दो वर्ष बाद उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जो भला चंगा और स्वस्थ है।

इस प्रकार अनेकों देवियां इस श्रेष्ठ साधना से अपनी आध्यात्मिक उन्नति करती आई हैं और सांसारिक सुख समृद्धि की प्राप्ति एवं आपत्तियों से छुटकारा पाने का अनुभव कर रही हैं। विधवा बहिनों के लिये तो गायत्री साधना एक सर्वोत्तम तपश्चर्या है। इससे उनके मानसिक विकार शान्त होते हैं। इन्द्रियों का दमन होता है, शोक, वियोग की ज्वाला बुझती है, बुद्धि में सात्विकता आती है, चित्त ईश्वर की ओर लगा रहता है नम्रता, सेवा, शील, सदाचार, निरालस्यता, सादगी, धर्मरुचि स्वाध्यायप्रियता, आस्तिकता एवं परमार्थ परायणता के तत्व बढ़ते हैं। गायत्री साधना की तपश्चर्या का आश्रय लेकर अनेक ऐसी बाल विधवाओं ने अपना जीवन सती साध्वी जैसा बिताया है, जिनकी कम आयु को देख कर आशङ्कायें की जाती थीं। जब ऐसी बहिनों को गायत्री में तन्मयता होने लगती है तो वे वैधव्य के दुःख को भूल जाती है और अपने को तपस्विनी, साध्वी, ब्रह्मवादिनी उज्वल चरित्रा तथा पवित्र आत्मा अनुभव करती हैं। ब्रह्मचर्य तो उनका जीवन सहचरी बनकर रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री और पुरुष नर और नारी दोनों ही वर्ग वेद माता गायत्री के पुत्र और पुत्री हैं। दोनों ही उनकी आंखों के दो तारे हैं। वह किसी से भेद भाव नहीं करतीं। माता को पुत्र से भी कन्या अधिक प्यारी होती है। वेद माता गायत्री की साधना पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के लिये अधिक सरल और अधिक फल दायिनी होती है।

अपने पतियों को सुखी समृद्ध, सम्पन्न, स्वस्थ, प्रसन्न दीर्घजीवी बनाने के लिये सधवा स्त्रियों को गायत्री की शरण लेनी चाहिये। इस से पतियों के बिगड़े हुये स्वभाव, विचार और आचरण शुद्ध होकर उनमें ऐसी सात्विक बुद्धि आती है कि वे अपने गृहस्थ जीवन के कर्त्तव्य धर्मों को तत्परता एवं प्रसन्नता पूर्वक पालन कर सकें इस साधना से स्त्रियों के स्वास्थ्य, सौंदर्य तथा स्वभाव में एक ऐसा आकर्षण उत्पन्न होता है जिससे वे सभी को परमप्रिय लगती हैं और उनका समुचित सत्कार होता है। अपना बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य, घर के अन्य लोगों का बिगड़ा स्वास्थ्य, आर्थिक तंगी, दरिद्रता, बढ़ा हुआ खर्च आमदनी की कमी, पारिवारिक क्लेश, मनमुटाव, आपसी राग द्वेष एवं बुरे दिनों के उपद्रवों को शांत करने के लिये महिलाओं को गायत्री उपासना करनी चाहिये। पिता के कुल एवं पतिकुल दोनों ही पक्षों के लिये यह साधना उपयोगी पड़ती है, पर सधवाओं की उपासना विशेष रूप से पतिकुल के लिये ही लाभ दायक होती है।

जो महिलायें गर्भवती हैं वे प्रातः सूर्योदय से पूर्व या रात्रि को सूर्य अस्त के पश्चात अपने गर्भ में गायत्री के सूर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदृश्य प्रचंड तेज का ध्यान किया करें और मन ही मन गायत्री जप, तो उनका बालक तेजस्वी, बुद्धिमान, चतुर, दीर्घजीवी तथा यशस्वी होता है।

ओ३म्

गायत्री साधना से सफलता के कुछ लक्षण

इसकी परीक्षा इन लक्षणों से हो सकती है। ये दस लक्षण नीचे दिये जाते हैं:—

१—शरीर में हलका-पन और मन में उत्साह होता है।

२—शरीर में से एक विशेष प्रकार की सुगन्ध आने लगती है।

३—त्वचा पर चिकनाई और कोमलता का अंश बढ़ जाता है।

४—तामसिक आहार विहार से घृणा बढ़ जाती है और सात्विक दिशा में मन लगता है।

५—स्वार्थ का कम और परमार्थ का अधिक ध्यान रहता है।

६—नेत्रों में तेज झलकने लगता है।

७—किसी व्यक्ति या कार्य के विषय में वह जरा भी विचार करता है तो उसके सम्बन्ध में बहुत सी बातें स्वयमेव प्रतिभासित होती हैं जो परीक्षा करने पर ठीक निकलती हैं।

८—दूसरों के मन के भाव जान लेने में देर नहीं लगती।

९—भविष्य में घटित होने वाली बातों का पूर्वाभास होने लगता है।

१०—शाप या आशीर्वाद सफल होने लगते हैं। अपने गुप्त शक्तियों से वह दूसरों का बहुत कुछ भला बुरा कर सकता है।

यह दस लक्षण इस बात के प्रमाण हैं कि साधक का गर्भ पक गया और सिद्ध का प्रसव हो चुका। इस शक्ति संतति को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो साधक सावधानी के साथ पालते पोसते हैं, उसे पुष्ट करते हैं, वे भविष्य में आज्ञाकारी बुजुर्ग की तरह आनन्दमय परिणामों का उपभोग करते हैं। परन्तु जो फूहड़ जमते ही सिद्ध का दुरुपयोग करते हैं, अपनी स्वल्प शक्ति का विचार न करते हुये उस पर अधिक भार डालते हैं उनकी गोदी खाली हो जाती है और मृतवत्सा माता की तरह उन्हें पश्चाताप करना पड़ता है।

ओ३म्

गायत्री सफलता——साधक की अवस्था

१--उसका व्यक्तित्व आकर्षक, नेत्र में चमक, वाणी में बल, चेहरे पर तेज, गंभीरता तथा स्थिरता होती है। जिससे दूसरों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। जो व्यक्ति उस के सम्पर्क में आते हैं वे उससे काफी प्रभावित हो जाते हैं तथा उस की इच्छानुसार आचरण करते हैं।

२--साधक को अपने अन्दर एक दैवी तेज की उपस्थिति प्रतीत होती है। वह अनुभव करता है कि उसके अन्तःकरण में कोई नई शक्ति काम कर रही है।

३—बुरे कामों से उसकी रुचि घटती जाती है और भले कामों में मन लगता है। कोई बुराई बन पड़ती है तो उसके लिये बड़ा खेद और पश्चात्ताप होता है। सुख तथा वैभव के समय में अधिक आनन्द न होता और दुःख, कठिनाई तथा विपत्ति के समय धैर्य खो कर कर्त्तव्य-विमूढ़ न होना उसकी विशेषता होती है।

४--भविष्य में जो घटनायें घटित होने वाली हैं उनका उसके मन में पहले से ही आभास आने लगता है। आरम्भ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो कुछ हल्का सा ही अंदाज होता है पर धीरे धीरे उसे भविष्य का ज्ञान सही २ होने लगता है।

५--उसके शाप और आशीर्वाद बिल्कुल सही होते हैं, यदि वह अन्तरात्मा से दुःखी होकर शाप देता है तो उस व्यक्ति पर भारी विपत्तियां आती हैं और प्रसन्न होकर जिसे वह सच्चे अन्तःकरण से आशीर्वाद देता है उसका मंगल होता है उसके आशीर्वाद विफल नहीं होते ।

६--वह दूसरे के मनोभावों को चेहरा देखते ही पहचान लेता है । कोई व्यक्ति कितना ही छिपावे उसके सामने वह भाव छिपते नहीं। वह किसी के भी गुण दोषों, विचारों तथा आचरणों को पारदर्शी की तरह अपनी सूक्ष्म दृष्टि से देख सकता है।

७--वह अपने विचारों को दूसरे के हृदय में प्रवेश कर सकता है। दूर रहने वाले मनुष्यों तक वह अपने तार व संदेश पहुँचा सकता है ।

८--जहां वह रहता है उसके आस पास का वातावरण वड़ा शांत एवं सात्विक रहता है। उसके पास बैठने वालों को जब तक वे समीप रहते हैं अपने अन्दर एक अद्भुत शांति, सात्विकता तथा पवित्रता अनुभव होती है।

९--वह अपनी तपस्या आयु या शक्ति का एक भाग किसी को दे सकता है और उसके द्वारा व्यक्ति बिना प्रयास या स्वल्प प्रयास में ही अधिक लाभान्वित हो सकता है । ऐसे व्यक्ति दूसरों पर "शक्तिपात" कर सकते हैं ।

१०--उसे स्वप्न में, जागृत में, ध्यानावस्था में, रंग-बिरंग प्रकाश पुंज, दिव्य ध्वनियां, दिव्य प्रकाश एवं दिव्य वाणियां सुनाई पड़ती हैं। कोई अलौकि शक्ति उस के साथ बार बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छेड़खानी, खिलवाड़ करती हुई सी दिखाई पड़ती है, उसे अनेकों प्रकार के ऐसे दिव्य अनुभव होते हैं जो बिना अलौकिक शक्ति के प्रभाव के साधारणतः नहीं होते।

ओ३म्

सावधानता

तांत्रिक पद्धति से किसी का मारण, मोहन, उच्चाटन वशीकरण करना, सट्टा, लाटरी, फीचर आदि बताना, गढ़ा धन, चोरी में गई वस्तु बताना किसी के गुप्त आचरण या मनोभावों को जानकर उनका प्रकट कर देना और उसकी प्रतिष्ठा आदि को घटाना आदि कार्य आध्यात्मिक साधकों के लिये सर्वथा निषिद्ध हैं। कोई ऐसा कार्य करके दिखाना जिस से लोग यह समझ लें कि यह सिद्ध है गायत्री साधकों के लिये कड़ाई से वर्जित हैं। यदि वे इस चक्कर में पड़े तो निश्चित ही उनकी शक्ति का स्रोत सूख जायेगा और वे कुछ बन कर अपनी कष्ट साध्य आध्यात्मिक कमाई से हाथ धो बैठेंगे। उनके लिये संसार को सद्ज्ञान, दान का ही कार्य इतना बड़ा एवं महत्वपूर्ण है कि उसी के द्वारा वे जन साधारण के आन्तरिक वाह्य और सामाजिक कष्टों को भली प्रकार दूर कर सकते हैं और स्वल्प साधनों में ही स्वर्गीय सुखों का आस्वादन कराते हुये लोगों का जीवन सफल बना सकते हैं। इस दिशा में कार्य करने से उनकी आध्यात्मिक शक्तियां बढ़ती हैं, इस के प्रतिकूल यदि वे चमत्कारों के प्रदर्शन के चक्कर में पड़ेंगे तो क्षणिक कौतूहल लोगों का अपने प्रति उनका आकर्षण थोड़े समय के लिए भले ही बढ़ा ले पर वस्तुतः अपनी और दूसरों की इस प्रकार कुसेवा होना ही सम्भव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुये हम इस पुस्तक के पाठकों और अनुयायियों को सावधान करते हैं, कड़े शब्दों में आदेश देते हैं कि वे अपनी सिद्धियों को गुप्त रक्खें, किसी पर प्रकट न करें जो दैवी चमत्कार दृष्टि गोचर हो उन्हें विश्वस्त अभिन्न हृदय मित्रों के अतिरिक्त और किसी से न कहें। आवश्यकता होने पर ऐसी घटनाओं के सम्बन्ध में इस पुस्तक के लेखक से भी परामर्श किया जा सकता है। गायत्री साधकों की यह जिम्मेदारी है कि वे प्राप्त शक्ति का रत्ती भर भी दुरुपयोग न करें। हम सावधान करते हैं कि कोई साधक इस मर्यादा का उल्लंघन न करे।

ओ३म्

सर्वेषामेव दानानां ब्रह्म दानं विशिष्यते

पुण्य कर्मों के साथ प्रसाद बांटना एक आवश्यक धर्म कृत्य माना गया है। यज्ञ के अन्त में उपस्थित व्यक्तियों को हलुआ या मिष्टान्न बांटते हैं। गीत मंगल, पूजा कीर्तन आदि के पश्चात् प्रसाद बांटा जाता है। देवता, पीर, मुरीद, गुरु आदि की प्रसन्नता के लिए बतासे, रेवड़ी या प्रसाद बांटा जाता है। मन्दिरों में जहां अधिक भीड़ होती है, और अधिक धन खर्चने को नहीं होता वहां जल में तुलसी पत्र डाल कर चरणामृत को ही प्रसाद रूप में बांटते हैं तात्पर्य यह है, कि शुभ कार्यों के पश्चात् कोई न कोई प्रसाद बांटना आवश्यक होता है इसका कारण यह है, कि शुभ कार्य के साथ जो शुभ वातावरण पैदा होता है, उसे खाद्य पदार्थों के साथ सम्बंध करके उपस्थित व्यक्तियों को देते हैं। ताकि वे भी उन शुभ तत्वों को ग्रहण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके आत्मसात कर सकें। दूसरी बात यह है, कि उस प्रसाद के साथ दिव्य तत्वों के प्रति श्रद्धा की धारणा होती है। और मधुर पदार्थ को ग्रहण करते समय प्रसन्नता का अभिर्भाव होता है। इन दोनो तत्वों की अभिवृद्धि से प्रसाद ग्रहण करने वाला आध्यात्म की ओर आकर्षित होता है। और यह आकर्षण अन्ततः उसके लिए सर्वतोमुखी कल्याण को प्राप्त कराने वाला सिद्ध होता है। यह परम्परा एक से दूसरे में, दूसरे से तीसरे में से चलती रहे। और धर्म वृद्धि का यह क्रम बराबर बढ़ता रहे। इस लाभ को ध्यान में रखते हुए आध्यात्म विद्या के आचार्यों ने यह आदेश दिया है कि प्रत्येक शुभ कार्य के अन्त में प्रसाद बांटना आवश्यक है। विवाह आदि संस्कारों के उपरान्त उत्सव कथा, व्रत, उपवास आदि के उपरान्त ब्रह्म भोजों तथा प्रीति भोजो का आयोजन किया जाता है। शास्त्रों में ऐसे आदेश मिलते हैं जिनमें कहा गया है, कि अन्त में प्रसाद वितरण न करने से यज्ञ कर्म निष्फल हो जाता है। इसका तात्पर्य प्रसाद के महत्व की ओर लोगों को सावधान करने का है।

जो व्यक्ति गायत्री की साधना करे उसे प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि मैं भगवती को प्रसन्न करने के लिये उसका महा प्रसाद ब्रह्म—प्रसाद अवश्य वितरण करूंगा। यह वितरण इस प्रकार होना चाहिये कि अपने परिचितों में, अपरिचितों में ऐसे व्यक्ति तलाश करने चाहिये जिनमें पहिले से कुछ शुभ संस्कारो के बीज मौजूद हों। उन्हें धीरे २ गायत्री का माहात्म्य रहस्य, लाभ, समझाते रहा जाये। जो लोग आध्यात्मिक उन्नति के महत्व को नहीं समझते उन्हें गायत्री से होने वाले भौतिक लाभो का सविस्तार वर्णन किया जाये। ब्रह्मप्रसाद द्वारा

SAMPLE STOCK VERIFICATION 1984 VERIFIED BY
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित गायत्री महत्व पढ़ाया जाये। इस प्रकार उनकी रुचि को इस दिशा में मोड़ा जाये, जिसमें कि वे आरम्भ में भले ही सकाम भावना से सही, वेदमाता का आश्रय ग्रहण करें, पीछे नीचे स्वयं ही इस महालाल पर मुग्ध होकर छोडने का नाम न लेंगे। एक बार रास्ते पर डाल देने से गाड़ी अपने आप ठीक मार्ग पर चलती जाती है। जिन्हें किसी प्रकार एक बार गायत्री माता के अंचल की शीतल छाया से गोदी में बैठने का आनन्द मिल गया वे उसे जीवन भर छोड़ने का नाम भी न लेंगे और सहज ही उनका आत्मा कल्याण हो जायेगा।

यह ब्रह्मप्रसाद अन्य साधारण स्थूल पदार्थों की अपेक्षा कहीं अधिक महत्व पूर्ण है। आइए, इस धन से नहीं अपितु प्रयत्न से ही वितरण हो सकने वाले ब्रह्म प्रसाद को वितरण करके वेद माता की कृपा प्राप्त कीजिए और अक्षय पुण्य के भागी बनिये।

ओ३म् शम्

भवदीय—

ब्रह्मानन्द स्वामी

सुरेन्द्र कुमार कपूर के प्रबन्ध से पञ्च-नद प्रेस अमृतसर में छपा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar